फैशन वही जो गरिमामय बनाए

वर्तमान में खुलेपन की संस्कृति और फैशन के नाम पर नित नए ड्रेस-डिजाइन बाजार में आ रहे हैं। इनसे किशोरी, युवती और प्रौढ़ा सभी बड़ी गहराई से प्रभावित हो रही है। इसके चलते खुद को बहुत समझदार और तेज-तर्रार मान कई युवतियां व महिलाएं व्यवस्थित वैचारिकता और विवेक की कमी के कारण अनिश्चय और भटकन की शिकार हो जाती हैं। कई युवतियां जब नई और टिपिकल डिजाइन की पोषाकें पहन कर निकलती हैं तो उनका मन बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करता है कि कोई उनकी तारीफ करे, उनकी पसंद की दाद दे, उनकी प्रशंसा के पुल बांध दे। कई बार कालेज में या शापिंग करते समय परिचित-अपरिचित युवक युवतियां कुछ ऐसे रिमार्क पास भी कर देते हैं। पर इन रिमार्को का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि ये काम्पलीमेंट्स नहीं वरन कमेंट्स थे। तू चीज बड़ी है मस्त-मस्त या हाय सेक्सी जैसे फिकरे सुनकर यदि आपको खुशी मिलती है तो सतर्क हो जाइए। यह आपके मानसिक स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ी होने का संकेत है। यह खुश होने का नहीं, बल्कि आपके द्वारा चुने गए रहन-सहन के पुनर्निरीक्षण का और अपने सोच-विचार को सही दिशा देने का वक्त है। आपको यह समझने की नितांत आवश्यकता है कि आप कोई 'चीज' या उपभोग की वस्तु नहीं है और इस तरह के रिमार्कों से आपकी गलत पहचान बनती है। आपके द्वारा अपनाए गए फैशन, वस्त्राभूषण आदि से यदि आपके व्यक्तित्व में निखार और गरिमा आने के बजाए उससे आपकी कोई गलत पहचान बनती है तो खुद अपने आप पर गलत लेबल लगाने जैसा है। इसके अलावा आपको अपना गरिमामय व्यक्तित्व बनाने के लिए कुछ खास बातों के प्रति सतर्कता रखनी होगी। शालीन वेशभूषा को चुनें- हमारी वेशभूषा शालीन होना चाहिए। केवल फैशन के नाम पर उलजलूल ड्रेस पहनने में कोई तुक नहीं है। यदि किसी खास डिजाइन की ड्रेस पहनने से लोगों की कामुक भावना उभरती है तो ऐसी ड्रेस आपके लिए खतरा बन सकती है और आपको कभी भी परेशानी में डाल सकती है।

महिलाओं की वेशभूषा में बहुत विविधता उपलब्ध है इसलिए हर फैशन हर कोई डिजाइन आप पर जंचे यह जरुरी नहीं है। इसलिए शालीन वस्त्रों का प्रयोग करना मोहकता और सुरक्षा दोनों दृष्टियों से बेहतर होता है। शालीन वस्त्रों के चुनाव से आपके सौन्दर्य और व्यक्तित्व में भव्यता आती है, जिसका प्रभाव अच्छा होता है। मेकअप मेनिया से बचें- कई महिलाओं की आदत हो जाती है कि वे दिनभर मेकअप किए रहती हैं। सुबह उठकर अपने शयन-कक्ष से बाहर निकलने से पहले मेकअप करना उनकी दिनचर्या का अंग बन जाता है। कई युवतियां या नवविवाहिताएं तथा कई उम्रदराज महिलाएं भी सब्जी खरीदने कहीं आसपास ही जाना हो तो भी मेकअप करना जरुरी समझती हैं। कुछ समय बाद आपकी त्वचा इसकी आदी हो सकती है और अपनी स्वाभाविक चमक खो सकती है। शालीन और समयोचित मेकअप आपको गरिमामय बनाएगा और उसका प्रभाव देखने वाले की आंखों में प्रशंसा के रुप में छलकता दिखाई देगा।सही अर्थों में आधुनिक बने- आधुनिक होने का अर्थ यह नहीं है कि फिल्मों और टी.वी सीरियलों के पात्रों का उनके रहन-सहन का, उनके द्वारा पहने गए वस्त्रों, आभूषणों का और उनके बनावटी व्यवहार का अंधानुकरण किया जाए। वही युवती आधुनिक है, जो आज की समस्याओं को जानती है और उनके समाधान के प्रति सजग रहती है। और नारी को मिलने वाली चुनौतियों से निपटने की ताकत रखती हो। संवेदनहीनता से बचें- पिछले दिनों जब मैंने अपनी एक सहेली से बिहार की बाढ़ की ट्रेजेडी पर दो शब्द ही बोले थे कि उन्होंने रोक दिया, कहा रहने दो, अभी मैं एक अच्छी फिल्म देखने जा रही हूं, क्यों मेरे मूड पर पानी फेर रही है, चलती हो तो फटाफट चल। ऐसी स्वकेन्द्रीत मानसिकता बनाने से बचें। इस तरह आप थोड़े से प्रयास से ही अपने व्यक्तित्व को प्रभावी और शालीन बना सकती है। यदि आपको कोई रचनात्मक शौक और प्रतिभा है तो वह आपके व्यक्तित्व को विशिष्ट गरिमा प्रदान करने में सहायक हो सकता है।

-आशा नागर
सी-12/9, ऋषि नगर, उज्जैन 456010 फोन 0734-2521157

शिव जोशी
मो. 98265-74147

।। श्री गणेशाय नमः।।

शैलेष जोशी
94240-53997, 9977237237

नया वर्ष आपके लिए मंगलमय हो

लायन शिव जोशी
श्रीमती सुशीला जोशी

शैलेष जोशी (पूर्व पार्षद)
श्रीमती मोनिता जोशी

हर्षिता, आज्ञा, राज जोशी

प्रतिष्ठान- जोशी स्टेशनरी, रिचार्ज, स्टोर्स- 42/10 स्टेशन रोड़, राऊ फोन 2856515,

श्री हाटकेश्वरो विजयते॥

उज्जैन में

नागर ब्राह्मण जीवन साथी परिचय सम्मेलन

दिनांक 24 दिसम्बर 2008, बुधवार

हम उन सभी अभिभावकों को सादर आमंत्रित करते हैं, जिनके सुपुत्र-सुपुत्री विवाह योग्य हो गये हैं और उनके लिए उपयुक्त जीवन-साथी चयन हेतु प्रयत्नशील है। कृपया इस परिचय सम्मेलन में अपने पुत्र-पुत्री की प्रविष्टि दर्ज करावें और इस शुभ अवसर का लाभ लेवें तथा अपने बच्चों के उपयुक्त जीवन साथी के चयन का मार्ग प्रशस्त करें।

सहमति-पत्र

नागर ब्राह्मण जीवन-साथी परिचय सम्मेलन

उम्मीदवार का नाम .....

पिता का नाम ..... माता का नाम .....

पता .....

मोबाईल नं.....फोन नं.....

जन्म तारीख.....जन्म स्थान.....

जन्म समय.....ऊंचाई.....वजन.....

शैक्षणिक योग्यता.....व्यवसाय/नौकरी.....मासिक आय.....

पिता का व्यवसाय/नौकरी.....परिवार के भाई/बहनों की जानकारी.....

वैवाहिक दर्जाः अपरिणित/विधुर/त्यक्ता.....

जन्म कुण्डलीः राशि.....नक्षत्र.....गण.....लग्न.....नाडी.....

गौत्र.....मंगल हैः हाँ/नहीं.....शनि हैः हाँ/नहीं.....

उम्मीदवार के साथ आने वाले सदस्यों की संख्या.....

आगमन दिनांक.....समय.....

फोटो रंगीन पासपोर्ट साईज

उम्मीदवार/अभिभावक के हस्ताक्षर

मैंने श्री.....को

रुपये.....व सहमति पत्र दिनांक..... को जमा करा दिया है।

आवेदन पत्र विभिन्न शहरों के प्रतिनिधियों को भी जमा करवाए जा सकते हैं। विस्तृत विवरण हेतु संपर्क करें-

सम्पर्क सूत्र-

श्री दिलीप मेहता - 21/1, क्षीरसागर कॉम्प्लेक्स, उज्जैन, फोनः2563035, मो. 94250-94581
श्री लव मेहता/कुश मेहता- सी 2/190, व्यास नगर, उज्जैन, मो. 98270-40793, 98270-88736
श्री मनीष मेहता- 42, अब्दालपुरा, उज्जैन, फोनः2577207, मो. 93011-37378
श्री विजय पौराणिक- 79, रविन्द्र नगर, उज्जैन, फोनः2516806
डॉ. जी.के. नागर- ए-5, धनवंतरी मार्ग, फ्रीगंज, उज्जैन, फोनः2514726
डॉ. मधु नागर- ए-1/4, वेदनगर, सांवेर रोड़, उज्जैन, फोनः2511532
श्री रामप्रसाद रावल- 83, खण्डेलवाल नगर, उज्जैन, मो. 98275-12566
श्री डॉ. नरेन्द्र नागर- बी-273, विवेकानंद कॉलोनी, उज्जैन, फोनः2550878
श्री रमेश मेहता प्रतीक- 530, सेठी नगर, उज्जैन, फोनः2521228,मो. 94250-93702

विनयावनत् -
म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद, शाखा उज्जैन
म.प्र. नागर ब्राह्मण युवक परिषद, शाखा उज्जैन
म.प्र. नागर ब्राह्मण महिला मण्डल, शाखा उज्जैन
श्री हाटकेश्वर नागर ब्राह्मण सार्वजनिक न्यास बम्बाखाना, उज्जैन,
श्री हाटकेश्वर मंदिर न्यास हरसिद्धि उज्जैन

हिन्दी की नागर लिपि के अविष्कारक है वडनगरा नागर

जो भगवान हाटकेश्वर को माने वो नागर कहलावे। नागर का अर्थ होता है ब्राह्मण! जब अखिल भारतीय ब्राह्मण एक हो रहे हैं तब नागर समाज विभाजित क्यों हो रहा हैं? श्री हाटकेश्वर महाराज चल समारोह में हम सब एक साथ क्यों नहीं चल सकते? इसलिए कि इन बेचारों को नागर उत्पत्ति का ज्ञान नहीं है। प्राचीन आनंदपुर वर्तमान बड़नगर गुजरात पर पठानों और गुर्जरों ने लगातार आक्रमण किया। लड़ते हुए नागर ब्राह्मण पलायन कर भारत के विभिन्न प्रदेशों के शहरों में बस गए। आवागमन और संचार, डाक व्यवस्था के अभाव में संबंध नहीं रह सके और एक दूसरों की पहचान समाप्त हो गई। विवाह संबंध भी न हो सके। फिर समय काल और परिस्थितियों के अनुसार नागर यहाँ वहां श्रम और व्यवसाय करने लगे। विभिन्न नगरों में फलने-फूलने लगे। जनेऊ और चांदी पर भी आक्रमण होते रहे। नगर और व्यवसाय के नाम से नागरों को जाना जाने लगा। कुछ अनुसंधानों के अनुसार नागर जाति हाटक (आज का लद्दाख) के आर्य जाति के वंशधर हैं जिनके इष्टदेव भगवान हाटकेश्वर या हाटकेश है। एक कथानक है कि नाग जाति द्वारा मानवों का संहार किया जाने लगा, नागरिकगण महर्षि त्रिजात के आश्रम पहुंचे। महर्षि ने तीन अक्षर नगरं-नगरं का मंत्र दिया। इस मंत्र का जाप करने से सर्प बाधा दूर हुई और वे लोग नागर समाज के नाम से प्रसिद्ध हुए। फिर इसमें पांच भेद हुए। भगवान शंकर के विवाह में पुरोहित नहीं होने पर शंकरजी ने 6 चावल के दाने फेंके। जिससे 6 ब्राह्मण उत्पन्न हुए। जिन्होंने विवाह सम्पन्न कराया। इन ब्राह्मणों का नाग कन्याओं से विवाह करा दिया। जो हाटकेश्वर तीर्थ में जाकर बसे वे नागर कहलाए। नागर जाति का पहचान चिन्ह कलम कडछी एवं बरछी रहा है। यज्ञ विद्या के साथ युद्ध विद्या के वे विशेषज्ञ थे। सोमनाथ पर आक्रमण में संगठित नागरों ने गजनवी की सेना से लोहा लिया था और प्राणों की आहुति दी थी। धर्म-कर्म के साथ युद्ध कोशल में निपुण होने से बादशाह मोहम्मद शाने गिरधर बहादुर नागर को उज्जैन का सुबेदार बनाया था। राजा बिसलदेव ने विसलनगर भेंट में दिया था। औरंगजेब के सेनापति और प्रधानों में भी नागर थे। गुजरात के प्रथम राजा यारा बल्य के कई वंशजो तक नागर प्रधानों में भी नागर थे। गुजरात के प्रथम राजा यारा बल्य के कई वंशजों तक नागर प्रधान अमात्य रहे थे। महाराजा पृथ्वीराज के पिता सोमेषजी का प्रधानमंत्री नागर ही था कन्नौज के राजा का मंत्री बाणभट्ट नागर था। स्कंद पुराण, वामन पुराण और शिव पुराण ने नागर जाति का विस्तार से उल्लेख है। आज तक नागर समाज राष्ट्र सेवा में समर्पित रहा। राष्ट्रभाषा हिन्दी की नागरी लिपि के आविष्कारक बड़नगरा नागर ही हैं। आज जो नागर है और कुलदेव हाटकेश्वर को मानते हैं वे सब ब्राह्मण होकर वे तीन प्रमुख बड़नगर, साठोदरा और बिसलनगरा का प्रतिनिधित्व करते हैं। पुनः विचार कर एकता का प्रयास कर नागर समाज को अखिल भारतीय स्वरुप प्रदान करें।

-कांतिलाल नागर,
उज्जैन

जय हाटकेश वाणी

इसमें नानी की कहानी है
नाना की जुबानी है।
बच्चों को लुभावनी है।
शिव की गाथा गानी है।
ग्रंथो सी सुहावनी है।
संतों की अमृत वाणी है।
ज्ञान की गंगा का पानी है।
देश विदेश में बखानी है।
नागर बंधुओं के कर्मों की
यह एक निशानी है।
इसमें बाबा बर्फानी है।
ज्ञान और मनोबल की बातें
इसमें और छपवानी है।
सबको जानी पहचानी है।
हर दिल की यह रानी है।
इससे परस्पर प्रेमभाव और
मेलमिलाप की प्रथा बढ़ानी है।
यह जय हाटकेश्वर वाणी है।

-हिमानी राजेश नागर
कालानी बाग, देवास

कृषि, किसान जगत का सजग राष्ट्रीय समाचार पत्र
कृषिओंकार
सभी क्षेत्रों में ऐजेन्सी देना है
सम्पर्क करें- मो. 94250-61063
सम्पादक- शशि बजाज

प्रेरक प्रसंग

घटना उस समय की है जब मेरी आयु करीब 12 वर्ष की रही होगी। प्रकृति के नीरव आंचल में मक्सी से चार किमी. दूर स्थित हमारे गांव झोंकर को दुल्हन की तरह सजाया गया था। चारों ओर खुशी का माहौल था, क्योंकि सिविल हॉस्पिटल की आधारशिला रखने तथा एक पारिवारिक समारोह में उपस्थित होने हेतु अभूतपूर्व सांसद स्व. श्री राधेलालजी व्यास पधार रहे थे। नेताजी का आगमन हुआ। इसी बीच वह हमारे काकाश्री स्व. श्री संतोषीलालजी पंड्या तथा स्व. वासुदेवजी पण्ड्या डाक अधीक्षक के घर मिलने पधारे। हमारे पिताश्री स्व. श्री वासुदेवजी सामुद्रिक ज्योतिषी थे उन्होंने नेताजी को हमारे घर पर भोजन का विशेष आग्रह किया। उनका घर आगमन मेरे लिये अत्यंत ही सुखकर था, क्योंकि नेताजी के बहाने से हमें भी अनेक मिष्ठान्न और पकवान खाने को मिलते थे. बालसुलभ मन इस बात की कल्पना कर आनंदित हो रहा था। नेताजी हमारे घर पधारे, किन्तु कुछ ही क्षणों में उन्होंने आतिथ्य परम्परा के निर्वाह और अन्य गतिविधियों को तुरन्त भांप लिया और पिताश्री से कहा कि जो कुछ घर में बना है वही उन्हें आतिथ्य रुप में स्वीकार है, अन्यथा नहीं। आखिरकार उन्होंने वही भोजन स्वीकार किया जो कि बना था।

आज जब इस घटना पर विचार करता हूं तो नेता नहीं नागरिक चाहिए वाली बात सामने आ जाती है। आज किसी भी नेता के आगमन पर पूरा का पूरा सरकारी अमला लग जाता है। अनावश्यक व्यर्थ के खर्च के साथ-साथ अपनी झांकी जमाने की बात भी सामने आ जाती है। मेरे बचपन की यह घटना नई पीढ़ी को नई थिंक और नई प्रेरणा देती रहेगी। आज सेवा निवृत्ति के बहुत करीब हूं, किन्तु आज भी इस घटना के बारे में सोचता हूं तो उदार व्यक्तित्व वाले, निर्मल हृदय तथा सादा जीवन-उच्च विचार रखने की प्रेरणा प्रदान करने वाले व्यक्तित्व की अनूठी प्रतिभा से आंखें सजल हो उठती हैं। **-हरिशचन्द्र शर्मा, उज्जैन**

सत्य करे श्रृंगार पर शोध प्रबंध

बांसवाड़ा। परतापुर जिला बांसवाड़ा के निकटवर्ती डडूका कस्बे के निवासी श्री नितेश शाह को उनके शाह प्रबन्धन कविवर धनपतराय झा के साहित्य में प्रतिबिम्ब आध्यात्मिक चेतना पर राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर ने डाक्टरेट की उपाधी प्रदान की है। इसका निर्देशन डॉ. पी.सी. जैन ने किया है। उल्लेखनीय है कि झा साहब की अधिकत्तर रचनाएं आध्यात्मिक विषयों का विस्तृत विवेचन है। सत्य करे श्रृंगार माँ भगवती सती के दिल में उठ रहे संशय को प्रयोग की कसोटी पर कसकर समाधान दिखाए है वहीं उनके खण्ड काव्य पार्वती परिणय दुर्गा दुर्गनाशीनी, शुकरसामृतम् , रुद्राष्टाध्यायी, दुर्गासप्तशती कर्मयोगी दीन बन्धु आंचलीक उपन्यास और तत्र विजयोभूति गीता पर निबंध संग्रह प्रमुख काव्य एवं छन्दानुवाद है सत्यकरे श्रृंगार श्री दीपक प्रिन्टर्स इन्दौर से प्रकाशित हुई है। डॉ. नीतेश शाह ने कविवर की इन्हीं कृतियों में पूर्ण रस लेकर सफल शोध प्रबन्धन का जो कार्य किया है उसके लिए कविवर प्रकाशक और सम्पूर्ण नागर समाज आभारी है।

15 दिसम्बर : पुण्य स्मरण

शिक्षा को समर्पित एक व्यक्तित्वःडॉ. शंकरलाल त्रिवेदी

बांसवाड़ा। जिला शिक्षा अधिकारी के पद से 1976 में सेवा निवृत्त होने के बाद वे निरन्तर शैक्षणिक क्षेत्र में सक्रिय रहे। 1 जुलाई 1921 को जन्में डॉ. त्रिवेदी ने माता सरस्वतीदेवी एवं पिताजी श्री श्यामलालजी त्रिवेदी के स्वप्न साकार करते हुए 1953 में आगरा वि.वि. से एम.ए. 1957 में करने के बाद राजस्थान वि.वि. से पुनः अंग्रेजी विषय में एम.ए., बी.ए. एवं एम.एड किया। राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त करने के बाद भी उनका हृदय बांसवाड़ा में शिक्षा के अवसरों की कमी को हमेशा महसूस करता रहा और सेवा निवृत्ति के पश्चात वे अपने इस ध्येय में प्रवृत्त हुए। भारतीय विद्या मन्दिर प्राथमिक विद्यालय से आरम्भ करके उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की। 1984 में बी.एड कॉलेज आरम्भ कर 1992 तक इसके प्राचार्य पद पर आसीन रहे। विभिन्न विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए। 180 कविताएं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। अमर आजादी पत्रिका प्रारम्भ कर उसका सम्पादन किया। 1993 में श्री हेमन्त और अ.सौ. सुधाबेन के विमान दुर्घटना में आकस्मिक देहावसान पर प्रकाशित "हेमसुधा स्मृतिग्रंथ" में डॉ. साहब ने प्रमुख संकलनकर्ता की जिम्मेदारी निभाई। सन् 2000 में उज्जैन में सिंहस्थ महाकुंभ में श्री उत्तमस्वामीजी के शिविर में एक माह तक भागवत कथा का पाठ किया। शिक्षा क्षेत्र को समर्पित व्यक्तित्व सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में गहरा दखल रखते हुए 15 दिसम्बर 05 को इस दुनिया से विदा हो गए। **-प्रमोदराय झा**

फोन 0731-2415602

नवरात्री की शुभकामनाओं के साथ
हम शॉपिंग के लिये आमंत्रित करते है इन्दौर एवं प्रदेशवासियों को
हेलोबेबी शॉप फेमेली क्लब
नवजात शिशु से नये-नये मम्मी-पापा तक
विशेषः गर्भवती महिलाओं के लिए गारमेंट और अंडरगारमेंट

न्यूबॉर्न शॉपीः बेसमेंट
बेबी वियर्स, बेबी राइड्स, स्वींग्स् (झुले), बेबी कॉट्स, स्ट्रालर्स, प्रॅम्स, वॉकर्स, फिडर्स, विप्पल्स, टिथर्स, रेटल्स, सुदर्स, ट्रेनिंग कप्स, बेबी कॉस्मेटिक्स, डायपर्स, रिकॉर्ड बुक्स आदि
किड्स शॉपीः ग्राउंड फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, टॉयज, साफ्ट टॉयज, डॉल्स, गेम्स, बुक्स, सीडीज एवं डीवीडीज आदि

टीनएजर्स शॉपी : 1st फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, बेग्स एंड पर्सेस आदि
मेन्स एंड वुमेन्स शॉपी : 2nd फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, कॉस्मेटिक्स, इमिटेशन ज्वेलरी, बेग्स एंड पर्सेस, बेड शीट्स एवं कवर्स, टॉवेल्स आदि
रेस्टारेन्ट : 3rd फ्लोर
शीघ्र ही प्रारंभ

स्थान- हेलोबेबी हाउस, कोठारी मार्केट चौराहा, एम.जी. रोड़, इन्दौर फोन 2531107

स्वस्थ्यता की परिभाषा क्या है?

बड़ा निराला है अपना शरीर

वैज्ञानिक कहते हैं कि हमारी धरती पर जितने भी जीव हैं, उनमें सबसे विकसित और सबसे ज्यादा बुद्धिमान प्राणी है, मनुष्य। मनुष्य के रुप में जन्म लेने को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। हाँ, इसी बात को इन शब्दों में कहा गया है- ''बड़े भाग मानुष तनु पावा, सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा'' अर्थात् बड़े भाग्य से मनुष्य शरीर मिलता है, सब ग्रंथ कहते हैं कि यह देवताओं को भी बड़ी मुश्किल से मिलता है। भगवान श्रीकृष्ण ने अपने प्रिय मित्र तथा शिष्य उद्धव को शरीर के विषय में जो कहा था, वह सार रुप में इस प्रकार है- मनुष्य शरीर दुर्लभ है, पुण्य कर्मों से प्राप्त होता है। सच्चे गुरु की सहायता से व्यक्ति इस शरीर का सर्वश्रेष्ठ उपयोग कर सकता है। मनुष्य के रुप में जन्म लेने के लिए देवता भी तपस्या करते हैं।

मानवता क्या है- मनुष्य के रुप में जन्म लेना सच मायने में भाग्य की बात है, क्योंकि मनुष्य अपने लिए तो जीता ही है, साथ-साथ दूसरों के भले के लिए भी जीवनभर काम करता है। मनुष्य के इस गुण को मानवता, इंसानियत और ह्यूमेनिटी कहते हैं। छोटे-छोटे उदाहरण से यह बात समझी जा सकती है। हमारे किसान भाई कड़ी धूप में, जोरदार बारिश में और कड़ाके की सर्दी में अपने खेत पर हाड़तोड़ मेहनत कर अन्न पैदा करते हैं। आखिर किसके लिए? हम सबके लिए। एक शिक्षक ज्ञान और जानकारी देकर अपने विद्यार्थियों को सुशिक्षित क्यों करता है? एक सैनिक दूर-दराज बर्फीले पहाड़ों और गर्म रेतीले मैदानों में चौकन्ना होकर अकेला क्यों खड़ा रहता है? चिकित्सक क्यों दिन और रात की परवाह किये बिना रोगियों का उपचार करता है? व्यापारी खाने-पीने और अन्य जरुरी वस्तुएं अपनी दुकान के माध्यम से घर-घर क्यों पहुंचाता है? यह मानवता ही तो है। इसीलिए मनुष्य शरीर को सबसे अच्छा माना गया है।

आखिर स्वास्थ्य या आरोग्य है क्या ?

आयुर्वेद में हजारों वर्ष पूर्व स्वस्थ व्यक्ति को जिस तरह परिभाषित किया गया था, उससे पता चलता है कि आयुर्वेद के आचार्यों की सोच कितनी वैज्ञानिक, सम्पूर्ण और बड़ी है। स्वास्थ्य के विषय में यह कहा गया है कि प्रसन्नात्मेन्द्रियमना स्वस्थ इत्यभिधीयते, अर्थात शरीर, इन्द्रियां, मन तथा आत्मा की प्रसन्नतापूर्ण स्थिति ही स्वास्थ्य है। विश्व स्वास्थ्य संगठन एक ऐसी संस्था है, जो संसार के सभी देशों को रोगों की रोकथाम के लिये मार्गदर्शन और मदद देने का कार्य करती है। इस संगठन ने स्वस्थ मनुष्य की परिभाषा में बताया है कि जो व्यक्ति शरीर से, मन से, सामाजिक तौर पर और आध्यात्मिक दृष्टि से रोगी नहीं है, वह स्वस्थ है। हमें जब बुखार आता है या उल्टी-दस्त होने लगते हैं या पीलिया आदि हो जाता है, तो ये शरीर के रोग हैं। तनाव, उदासी, हताशा, निराशा, क्रोध, चिड़चिड़ापन या किसी से जलन है, ये मन के रोग कहे जा सकते हैं। हम दूसरे का बुरा करने की योजना बनाते हैं, यह बुद्धि का रोग है। कुछ लोग सम्मान की दृष्टि से समाज में उपेक्षित हैं, शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए हैं या किन्हीं अन्य कारणों से समाज में समरस नहीं हो पाते हैं, मेरी दृष्टि में ये सामाजिक रोग कहे जा सकते हैं। प्रसन्नता नहीं है, संतोष नहीं है, दुःख है, ये आत्मा के रोग माने जा सकते हैं। जिस व्यक्ति के शरीर में कोई रोग नहीं है। दूसरे मनुष्यों और जीव-जन्तुओं, पेड़-पौधों के प्रति प्रेम है, उनका भला करने की भावना है, सभी मनुष्यों को अपने समान तथा समकक्ष मानता है और उनका आदर करता है, साथ ही प्रसन्नता और संतोष है, तो समझ लीजिए, वह व्यक्ति स्वस्थ है और मनुष्य भी है।

-शेष अगले अंक में

साभार डॉ. मनोहर भंडारी
की पुस्तक ''बाल आरोग्य मित्र'' से

गम के अंधेरे

मुझे मेरे गम के अंधेरे में जी लेने दो,
अश्क आँखों से बहे तो मुझे पी लेने दो।
करता नहीं तुमसे कभी मैं शिकवा-शिकायत,
जख्म है जो बदन पर, उनको हरे ही रहने दो।
खींच ली दीवार नफरत की, गिला करता नहीं फिर भी,
दामन पाक रख लेना, मुझे इल्जाम सह लेने दो।
हर खुशी मिलती रहे, बहारें चमें दामन तेरे,
अंधेरे में ही जी लूंगा, हलाहल शिव को पी लेने दो।

-शिव मेहता 'शिव'
मक्सी

नागर इन्टर प्राईजेस

दलहन एवं तिलहन (अनाज) के क्रेता एवं विक्रेता

प्रोपा.
एल.एन. नागर
राजेश नागर,
सुरेन्द्र नागर

शादी एवं पार्टी के लिये मारुती वेन एवं अन्य वाहन उपलब्ध है

रेल्वे स्टेशन चौराहा, ए.बी. रोड, शाजापुर, (म.प्र.) फोन 228711 मो. 9424000477, 9425034721, 9893800501

नागर समाज का उद्‌गम स्थल- बड़नगर (गुजरात)

जय हाटकेशवाणी और इको टुर इन्दौर से और नागर परिषद झाबुआ से आगामी माह में नागरतीर्थों की यात्राओं का आयोजन किया है।वह स्वागत योग्य है इस यात्रा में हमारी कुलदेवी श्री अम्बाजी का स्थानक भी होगा और कुलदेवता बड़नगर का हाटकेश्वर मंदिर भी। द्वारका और सोमनाथ का भी अतिरिक्त आकर्षण इस यात्रा में बरकरार रहेगा। मुझे भी बरबस 1996 में पुनम मण्डल बासवाड़ा द्वारा आयोजित श्री अम्बाजी और 1998 में बहुचरा मण्डल बांसवाड़ा द्वारा आयोजित बड़नगर और श्री बहुचराजी की याद आ गई है। वास्तव में सामुहिक यात्राओं का आनन्द ही अनोखा होता है पिछले अंक में श्री अम्बाजी और इस अंक में बड़नगर की दास्तान पेश करने का यह प्रयास है। बड़नगर अहमदाबाद से मात्र 112 कि.मी. और मेहसाणा से 34 कि.मी. दूर है प्राचीनकाल में घनी आबादी वाला कहा जाने वाले बड़नगर की ताजा 2001 की जनगणना में जनसंख्या मात्र 25 हजार है। अरावली की पहाड़ियों से बहती कपीला नदी में किनारों पर बसा यह शहर कृत्रिम पहाड़ियों पर कई परतों में दिखाई देता है यह प्रदेश सतयुग में चमत्कारपुर, त्रेतायुग में आर्तपुर और आनन्दपुर, स्नेहपुर द्वापरयुग में विमलपुर और कलीयुग में बड़नगर के नाम से प्रसिद्ध है नागरों के प्रताप से अनर्त देश में शांतितीर्थ शक्तितीर्थ की बावड़ी में स्थान करने से वहां के राजा चमत्कार का कोढ़ निवारण हुआ था इसने इसे चमत्कार नाम दिया। वेदों के ज्ञाता याज्ञ वल्क का यह जन्म और कर्मस्थल भी रहा है। सोमनाथ की तरह आर्न्तदेश की राजधानी बड़नगर भी अपनी प्रसिद्धी के कारण आक्रमणकारियों से परेशान रहा। चीनी यात्री ने 627 एडी और 643 में यहां का दौरा किया जिसमें आज का राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र प्रमुख था। शहरों के लिहाज से आनंदपुर, वल्लभी, उज्जैन, भरुच प्रमुख थे। आइने अकबरी, डॉ. सुब्बाराव ने भी वहां का विस्तृत वर्णन किया है। जैसे-जैसे आक्रमण होते गये नागर वहां से पाटण सौराष्ट्र, जुनागढ़ जाते गये और बड़नगरा, विशनगरा, प्रश्नोरा, दशोरा, चित्तोड़ा और कृष्णोरा में विभक्त होते गये जहां-जहां राज्य मिला दिवान और अन्य महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सम्भालने लगे, सेनाओं का भी संचालन करने लगे। स्वपाकी होने से करछी भी साथ में ही थी इसीलिए कलम, करछी, बरछी के धनी कहे जाने लगे । नागर संस्कृति के उद्‌भव और प्रसिद्धी को दर्शाता हाटकेश्वर मंदिर 15 वी शताब्दी में क्लासिकल स्टाइल में लाल और पीले पत्थरों से बना हुआ है। इसके चारो और उंची दीवारे है तीन बड़े गोलाकार स्तुप एवं मुख्य मंदिर पर लम्बा भिन्न-भिन्न कोण दिखाता स्तुप आकाश में है यह पूर्वाभिमुखी है परन्तु अन्दर जाने के मार्ग उत्तर और दक्षिण की तरफ है वहां प्रवेश के बाद एक बड़े हवादरा सेन्ट्रल हाल से पश्चिम में जाकर गर्भ गृह है शिवलिंग स्वयंभू (आपलींग) है जिसे 9(NINE) नक्षत्रों (प्लेनेटस) समस्त देवी देवताओं, कृष्णजीवन लीलाओं, महाभारत काल की पाण्डवों की कथाओं और जानवरों से सजाया गया है। यहां प्राचीन स्वामीनारायण के स्त्री, पुरुषों के लिए अलग-अलग मंदिर है। आशापुरी माता मंदिर (शक्तिपीठ) भुवनेश्वरी मंदिर सीतलामाता मंदिर सोमनाथ महादेव मंदिर, दानेश्वर महादेव और विष्णुपुरी मंदिर प्रमुख है। आइने अकबरी में अबुलफजल यहां 3000 मंदिरों का उल्लेख करते है यहां किर्ती तोरण भी है जिसे नागर संत नरसी मेहता की चोरी के नाम से जाना जाता है।

प्राचीन स्थापत्य के लिहाज से कुए, श्रमष्णा झील, बावड़ीया और बड़े-बड़े दरवाजों की सुन्दरता सबका मन मोह लेती है। पूरे शहर को रक्षात्मक ढंग से एक किले में तब्दील किया है जिसमें 6 द्वार है। बारहवीं सदी के द्वार एवं सोलंकी साम्राज्य के तोरण द्वारा नष्ट भी हो गये है और बेतरतीन तरीके से उन्हें पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है। प्राचिनकाल में शिक्षा का भी चमत्कारी केन्द्र रहा है याज्ञवल्क जैसे वेदों के ज्ञाता जन्में और ज्ञान का प्रकाश फैलाया। अकबर के दरबार में दीपक राग गाने से उनके दरबारी तानसेन अपना जलता बदन लेकर बड़नगर आया था जिसका कोई इलाज नहीं था तब तानारिरि नामक दो नागर कन्याओं ने आगे बढ़कर मल्हार राग गाकर मेघ मल्हार का आव्हान किया और तानसेन की पीड़ा शान्त की। इतने बड़े अहसान के बदले बादशाह अकबर ने दोनों को राजदरबार में जबरदस्ती बुलवाना चाहा और इन्कार करने पर आक्रमण कर दिया जिससे सैकड़ों नागरों को अपनी जान देनी पड़ी । जिसकी स्मृति में एक देहरी और गार्डन अभी भी जिवन्त है। यही हमारे समाज की गाथाओं को आज यादगार बनाये हुए है।

- मंजु प्रमोदराय झा
सी-20 सुविधी नगर, इन्दौर
email-nagarsamaj@gmail.com

प्रगति के पथ पर अग्रसर– नागर समाज

सुवा और सूतक का उठावना

जय हाटकेश वाणी में प्रकाशित (अगस्त 08) कर्मकाण्ड के विषय में जो विचार प्रकट किये गये उन्हें काफी सराहा गया। अनुभवी बुजुर्गों ने इसे कर्मकाण्ड से मुक्ति की ओर दूसरा कदम निरुपित किया। कुछ प्रगतिशील विचार रखने वालों ने अपने परिवारजनों से (स्वयं के लिये) पिण्डकर्म न करने की सहमति दी। कुछ लोगों ने विरोध भी जताया। विद्युत शवदाह को अपनाने में भी दो माह में 50 प्रतिशत प्रगति हुई। बुजुर्गों ने उनका दाह संस्कार विद्युत शवदाह गृह में करने की सहमति अपने परिवार में दी।

सुवा अर्थात बच्चे के जन्म से दस दिन तक रखा जाने वाला छुआ छूत कार्यक्रम इसके अंतर्गत देवपूजा आदि का निषेध भी है। आजकल बच्चे के जन्म पर बधाई देने प्रसूति गृह या अस्पताल पहुचते हैं। बच्चे के हाथ में आशीर्वाद स्वरुप नोट रखते हैं वहां उन्हें भगवान की प्रसाद के रुप में मिठाई मिलती है। कितने लोग इस छुआ छूत के बाद घर जाकर स्नान करते हैं ? इसी प्रकार मृतक के घर शोक संवेदना हेतु जाते हैं। एक ही फर्श पर मृतक के परिवारजनों के साथ बैठते हैं। चाय पानी भी होता है। सूतक के निर्धारित नियमों के यह सर्वथा प्रतिकूल है। क्या धीरे-धीरे समाज प्राचीन परम्पराओं से निजात नहीं पा रहा है? अब हमारा समाज उठावने की ओर अग्रसर हो रहा है। विगत् वर्षों में कई नागरजनों ने उठावने को अपना कर प्रगतिशील होने का जोखिम उठाया है क्योंकि रुढ़िवादी लोग इसे परम्पराओं के विरुद्ध मानते हैं। अभी हाल ही में म.प्र. नागर परिषद के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्रजी व्यास ने अपनी माताजी के देवलोक गमन के अवसर पर उठावना अपनाया जो प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। अधिकांश नागरजन नौकरीपेशा है या दुकान धन्धा करते हैं ऐसे में उनके लिये 13 दिन तक सूतक में रह कर घर बैठना सम्भव नहीं है। शाजापुर, उज्जैन, इन्दौर आदि ने इसे अपनाया है, आंशिक रुप में भविष्य में भी इसकी आवश्यकता को देखते हुए यह (उठावना) मान्यता प्राप्त कर लेगा ऐसा आभास हो रहा है समय और परिस्थिति को देखते हुए कई परिवर्तन हुए हैं, परम्पराएं बदली है। उनमें सुविधानुसार सुधार हुआ है। और आगे भी होता रहेगा।

प्रस्तुति-रामचन्द्र जोशी
सिन्धी कालोनी, उज्जैन

आश्रय से शुरुआत, आश्रय पर खत्म

न अपेक्षा ना उपेक्षा
मूक भी जानते है शिशु की आवश्यकता
नहीं होती कोई सोच
क्यों कर हो रहा है लालन पालन
चलता ही नहीं पता
कब वो मानने लगता है बढ़ा
अपने आपको !
बन जाती है उसकी खुद की सोच
चलने व चलाने लगता है बन कवच
संबंधी आश्रित व परिचित को
उसकी दृढ़ता
उसका निश्चय
उसके विचार
लड़ते समय
और परिस्थितियों से
हो जाते है शिथिल
उसकी दूर दृष्टि
ढूंढने लगती है आत्मबल
पता उसे न ही चलता
कब हो जाता है वो आश्रित
उसे लगने कब लगती
है सकारात्मक सहायता
कब वो चाहने लगता है सहारा
और सब सिमट जाता है
झुकी कमर और बेजान छड़ी में।

प्रस्तुति - मुकुल व्ही मंडलोई
सुदामा नगर, इन्दौर
फोन 0731-2484370

।। श्री गणेशाय नमः ।।

विजय स्टील डेकोर

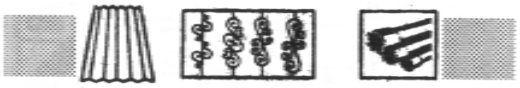

35, धनवन्तरी नगर, जी-1, राजसुधा अपार्टमेन्ट,
दधिची चौराहा, इन्दौर फोन 2321578,
मो. 98268-32786, 98936-24291

।। श्री सांई नमामि नमः ।।

फाइबर शीट मनभावन रंग एवं डिजाईन्स में रेडी स्टॉक में उपलब्ध
घर में बाल्कनी एवं सीढ़ीयों में उपयोग होने वाली
Railing Stair Case/Casting/Wrought Iron/Stainless Steel, Brass Exclusive
G.P. Fitting "Spring", Sanitary Fitting Gold Line. C.P.
की सम्पूर्ण श्रृंखला व सभी कम्पनियों के.जी.आई.पाइप के विक्रेता
सभी प्रकार के हार्डवेयर का सामान इन्दौर शहर के मूल्य पर
आपकी कालोनी में उपलब्ध

R.K. Dave (Pappu)

नागर गृहिणी का साहसिक कदम

इन्दौर। सोचा भी नहीं, - हकीकत बना - उद्यमिता का कदम, अखबारों में मराठी सोशल ग्रुप की जत्रा का विवरण देखा। क्यों न कोशिश की जाये, जत्रा के फूड जोन में एक स्टॉल बुक करें। विचार विमर्श के बाद नागर। जोशी परिवार की गृहणी आगे आयी। ग्रुप द्वारा मराठी व्यंजन ''पुरण पोली'' दिया गया। जत्रा में सुश्री श्रीमती जया नागर के नेतृत्व में दोनो परिवार के सम्मिलित प्रयास से स्टॉल का रुप साकार हुआ। फूड जोन में विभिन्न मराठी व्यंजनो के 53 स्टॉल लगे प्रत्येक को एक-एक व्यंजन ग्रुप द्वारा दिया गया। इस प्रतिस्पर्धा में हम कहां तक आगे बढ़ पायेंगे विचारणीय प्रश्न था। तीन दिवसीय जत्रा की हलचल दिनांक 17 अक्टूबर 2008 से शुरु हो गई। जो कल्पना दिमाग में थी उस अनुसार गाड़ी चल पड़ी। विश्वास कीजिए तीनों दिन इन्दौर के व्यंजन प्रिय प्रेमियों को स्नेह, आजीजी व सत्कार के साथ पुरण पोली का लुत्फ उपलब्ध कराया। इस दौरान 1000 से 1500 से अधिक खान-पान के शोकिनों के मुंह में हमारी पुरण पोली की मिठास घोली। जिसके स्वाद व गुणवत्ता की प्रशंसा हर ग्राहक ने समक्ष में की।

ग्राहकों की सन्तुष्टी ही हमारा ध्येय रहा इसके लिए स्टॉल पर ही उन्हें गरम-गरम पुरण पोली तैयार कर उसी समय उपलब्ध करायी। डायबिटीज पेशेन्ट्स के लिए भी उनकी मांग पर शुगर फ्री पूरण पोली की भी व्यवस्था रखी गई जिसकी पूर्ति पृथक से उन्हें की गई । घर पर आनन्द उठाने वाले ग्राहकों को तैयार पूरण पोली के पेकेट्स भी दिये।

जत्रा में अन्य दो और पूरण पोली के स्टॉल लगे थे। लेकिन पूरण पोली के उचित मिश्रण, बनावट, स्वाद एवं गुणवत्ता के प्रति प्रत्येक ग्राहक संतुष्ट होकर उसकी तारीफ करता गया। उद्यमिता की दिशा का अनुभव न होने के उपरांत भी नागर समाज की गृहणियों का यह एकल प्रयास इतने कम समय में सफलता प्राप्त कर सका एक स्मरण रखने योग्य उपलब्धि मानी जा सकती है।

-पी.आर. जोशी
528, उषा नगर एक्स. इन्दौर

मासिक जय हाटकेश वाणी को वेबसाइट पर मिला प्रतिसाद

सात समन्दर पार बसे हमारे नागर बंधुओं को अपने शहर और देश की सामाजिक गतिविधियों से अवगत कराने के जय हाटकेश वाणी के प्रयास को भारी प्रतिसाद मिला है। आपकी अपनी मासिक पत्रिका हाटकेश वाणी ने एक और विशेष उपलब्धि दर्ज की है। वेबसाईट पर पत्रिका को रखे जाने के बाद से दिनांक 4 नवम्बर तक जय हाटकेश वाणी को 20299 लोगों ने देखा और सराहा है। पाठकों से एक विशेष अनुरोध है कि विदेशों में बसे अपने परिजनों एवं अन्य नागर बंधुओं को भी इस वेबसाइट के बारे में बताएं ताकि वे भी हमारी सामाजिक गतिविधियों और जानकारियों से अवगत हो सके। हमारी वेबसाइट awantikaindore.com है।

-सम्पादक

डाकघर की विभिन्न बचत योजनाओं में निवेश कर आकर्षक लाभ कमायें

किसान विकास पत्र ❐ छह वर्षीय बचत पत्र ❐ सावधी जमा ❐ ५ वर्षीय आर.डी. खाता ❐ मासिक आय योजना ❐ लोक भविष्यनिधि खाता ❐ वरिष्ठ नागरिक बचत योजना ९ प्रतिशत ब्याज

सम्पर्क सूत्र- डाकघर बचत अभिकर्ता, कृष्णकांत शुक्ल
सी-५९, अभिलाषा कालोनी, देवास रोड़, उज्जैन फोन २५११८८५, मो. ९४२५९-१५२९२

राम रावण एक विवेचन

राम और रावण दोनों एक ही नाम राशि के और एक ही युग के अवतरित पर स्वभाव से सर्वथा एक दूसरे से भिन्न और एक दूसरे के शत्रु। राम जहां एक पत्नी धारी मर्यादित संकोची और मृदुभाषी के रुप में पूजे जाते हैं वही रावण पूर्णतया अमर्यादित के रुप में जाना जाता है। श्री राम की खास विशेषता उनके मर्यादा पुरुषोत्तम वाले स्वरुप में है। हर क्षेत्र में वे मर्यादा से बंधे हुए हैं। कहीं भी उनका हित या स्वार्थ उन पर हावी नहीं होता। वे रघुकुल के भूषण हैं - इसीलिए वे जन-जन के हृदय में भगवान के रुप में प्रतिष्ठित हैं। उनका यही गुण उन्हें देवत्व की श्रेणी में खड़ा कर देता है। दूसरी तरफ रावण अपने स्वभाव के कारण राक्षसों की पंक्ति में खड़ा हुआ है। मंदोदरी जैसी रानी का पति होते हुए भी सीता जैसी पतिव्रता नारी का अपहरण करना उसके स्वभाव की उच्छृंखलता का परिचय देता है। साथ ही उसके इस स्वभाव की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि सीता का अपहरण करने के बावजूद उसने सीता का कभी स्पर्श नहीं किया। क्योंकि वह सतीत्व की महत्ता पहचानता था। सुन्दरकांड में सीता को उसने हर तरह से डराता है कि किसी तरह सीता उसकी तरफ एक बार देख ले पर जब उसे सफलता नहीं मिलती तो वह उसे राक्षसियों के सुपुर्द करके चला जाता है स्वयं कुछ नहीं करता। रावण जानता था कि राम कभी राक्षसों की नगरी में नहीं आएंगे । अतः राक्षसों का कभी उद्धार नहीं होगा। इसीलिए उसने सीता हरण की योजना बनाई और श्री राम को मजबूर कर दिया कि वे लंका में प्रवेश करें। हुआ भी यही उनके लंका में प्रवेश करते ही लंका नगरी का उसी तरह उद्धार हो गया जैसा राम ने जटायु, शबरी और अहिल्या का उद्धार किया। कहा जाता है कि निरंतर राम नाम जाप से मनुष्य का उद्धार हो जाता है- रावण ने अनजाने में राम के विरुद्ध इतनी बार राम का नाम लिया कि उसका उद्धार हो गया। तुलसीदास जी ने लिखा है-रामाकार भए तिन्ह के मन, मुक्त भए छूटे भव बंधन सुर असिक कपि अरु रीछ जिए सकल प्रभु इच्छा अर्थात राक्षसों के मन मरते समय रामाकार हो गए थे इसलिए वे मुक्त हो गए भव बंधन से छूट गए पर बानर भालू देवांश रुप थे इसलिए प्रभु इच्छा से पुनः जीवित हो गए। रावण को तीन जन्मों का श्राप था। श्री हरि के द्वारपाल जय और विजय को ब्राह्मण के श्राप के कारण रावण और कुम्भकर्ण के रुप में जन्म लेना पड़ा। श्री राम को भी नारद जी का श्राप था। संक्षेप में कहानी इस प्रकार है- एक बार नारद जी भगवान से सुन्दर होने का वरदान मांग कर एक सभा में गए। भगवान ने उनके साथ मजाक किया और उन्हें बंदर की शक्ल दे दी। सभा में उनका इस रुप के कारण मजाक बनाया गया। उन्हें जब यह बात पता चली तो पानी में जाकर उन्होंने अपनी शक्ल देखी तब उन्हें असलियत पता चली - भगवान को उन्होंने श्राप दिया कि तुम्हें स्त्री वियोग होगा और इन्हीं बंदरों की ही सहायता लेनी पड़ेगी। हुआ भी ऐसा। रावण एक बड़ा योद्धा था जिसने स्वयं सिर काट कर अग्नि को होम किया और दशानन का वरदान पाया। रावण संस्कृत का प्रकाण्ड पंडित और वेदों का ज्ञाता था। राम के समान शिवभक्त था। अगर रावण ने सीता का छल से अपहरण किया तो राम ने बालि को भी छल से मारा। अगर राम को यह नहीं बताया जाता कि रावण नाभि में तीर लगने से मरेगा तो रावण को मारना असंभव था। फिर भी राम अवतरित थे वह तो लीला कर रहे थे। अगर यह कहा जाए कि रावण न होता तो राम पृथ्वी पर न आते न रामराज्य होता न रामायण लिखी जाती कंस न होता तो कृष्ण न होते न महाभारत होता। कहने का आशय यह है कि राम और कृष्ण की महत्ता रावण और कंस के होने से है- अच्छाई और बुराई का चोली दामन का साथ है। रावण एक बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ भी था। इसलिए कहा जाता है कि जब रावण मरणासन्न स्थिति में था तब श्री राम ने लक्ष्मण को रावण के पास राजनीति सीखने के लिए भेजा। लक्ष्मण यह सोच कर कि रावण बोलने में असमर्थ हो रहा है वे उसके सिर के पास बैठ कर राजनीति की शिक्षा लेना चाहते हैं तब रावण उनसे यह कहता है कि राजनीति सिर पर चढ़ कर पैरो के पास बैठ कर सीखी जाती है अर्थात कोई भी शिक्षा गुरु के चरणों में बैठकर नहीं सीखी जाती है। चाहे वह गुरु रावण जैसा राक्षस ही क्यों न हो। राम और रावण का युद्ध दो राजाओं के बीच का सामान्य युद्ध नहीं था बल्कि दो विचार धाराओं का संघर्ष था। एक तरफ आध्यात्मिकता थी दूसरी तरफ भौतिकता। रावण निर्माण में विश्वास रखता। सोने की लंका इसका ज्वलंत उदाहरण है। जीव हत्या पाप समझता था। इसीलिए हनुमान जी को मारा नहीं उनकी पूंछ में आग लगा दी। इसमें स्वयं की लंका का काफी नुकसान भी हुआ। जिस तरह राम का भातृ प्रेम प्रसिद्ध है- वैसे रावण का विभिषण के प्रति विशेष प्रेम था। राम के विरुद्ध होते हुए भी विभिषण को राम की आराधना करने की आज्ञा देना उसकी भलमनसाहत का उदाहरण है।

-श्रीमती सविता (नीलू दवे)
29 शांति विहार, दिल्ली

जिसने सिद्धांतों के साथ कभी समझौता नहीं किया

मध्यप्रदेश का प्रमुख समाचार पत्र **दैनिक अवन्तिका**

इन्दौर-7, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड फोनः-0731-4085777 मो.-98277-71777

उज्जैन- 2, रानी लक्ष्मीबाई मार्ग फोनः-0734-2554455 फेक्सः-2559777

इन्दौर- 20, जूनी कसेरा बाखल, फोनः-0731-2450018 फेक्सः-2459026

प्रश्नोरा नागरों के दशपुर आगमन के अन्य विवरण

गतांक से आगे....

मन्दसोर आगमन का दूसरा विवरण- जूनागढ़ से इन प्रश्नोरा नागरों का मन्दसोर में आगमन का दूसरा कारण यवनों का आक्रमण भी बताया जाता है। जिस समय यवनों का गुजरात पर शासन था उस समय इनके अत्याचारों से त्रस्त होकर इन धर्मप्राण हिन्दुओं के यूथ के यूथ गुजरात से चलकर उत्तर की ओर हिन्दू राज्यों में अपने धर्म और प्राण रक्षार्थ जाकर बसने लगे। इसी संदर्भ में प्रश्नोरा नागरों का एक यूथ गुजरात प्रान्त के जूनागढ़ राज्य के खटयोड़ा आदि नगरों से निकलकर उत्तर की ओर रवाना हुआ। मार्ग में गुजरात प्रान्त के अन्य नगरों से भी प्रश्नोरा नागर इस यूथ में सम्मिलित होते गये। चलते-चलते इस यूथ ने दशपुर नामक नगर में प्रवेश किया। वहां के तत्कालीन राजा ने उनको वहां निवास की आज्ञा दे दी तथा आवश्यक सुविधा की व्यवस्था कर दी। समय पाकर इन नागरों का राज्य शासन में प्रभुत्व बढ़ता गया। राजा के कोई संतान नहीं थी, अतः राजा दशरथ देव के स्वर्गवास के पश्चात इन्होंने राज काज संभालकर अपने राज्य को प्रजातन्त्र घोषित कर दिया। प्रजातन्त्र में इनका बहुमत था इसलिए इन्होंने राज्याध्यक्ष अपनी ही जाति का नियत किया। इनके राज्य की स्थिति सुदृढ़ होने के कारण इन्होंने अपनी प्रश्नोरा नागर जाति का नाम अपने निवासानुसार दशपुरोय "प्रश्नोरा नागर" रख दिया जो बाद में सूक्ष्म रुप में दशोरा हो गया। मन्दसोर आगमन का तीसरा विवरण- प्रश्नोरा नागरों के मन्दसोर आगमन के बारे में एक जनश्रुति और भी है कि एकबार जूनागढ़ के ये ब्राह्मण अयोध्या के राजा दशरथ से मिलने गये। राजा दशरथ इनके पांडित्य से बहुत प्रभावित हुए तथा उन्होंने दशोर नगर की एक जागीर दान में देना चाही किन्तु इन ब्राह्मणों ने इसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया तो राजा ने इनकी विदाई के समय इन्हें पान भेंट किया जिसमें एक हीरा तथा एक दान पत्र रख दिया। जिसमें लिखा था, आपने मेरे घर को पवित्र किया इस वास्ते मैं अपनी भक्ति और श्रद्धा के अनुसार दशोर नामक एक छोटा सा गांव आपके अर्पण करता हूं। जब इन्होंने इस दान पत्र को पढ़ा तो इन्हें बहुत शोक हुआ और बार-बार कहने लगे कि राजा ने हमसे बड़ा कपट किया है। वे इन्हें शाप देने को भी तैयार हो गये किन्तु बाद में ऐसा मानकर कि अनजाने का कोई दोष नहीं है, वे सरयू नदी में स्नान करने चले गये तथा जूनागढ़ लौटने से पूर्व वे इस नदी का पवित्र जल भी साथ में ले गये। जूनागढ़ पहुंच कर वे बान्धवों से मिले तो उनमें बड़ा हर्ष हुआ। इसके बाद इन्होंने अपनी तीर्थ यात्रा का हाल सुनाया और दान-पत्र भी दिखाया और कहा कि हमसे बड़ी भूल हुई है कि हमने भूमि का दान ग्रहण किया है। किन्तु इसमें हमारा दोष नहीं है। राजा ने मुझे छल से यह दान दिया है। अब तुम्हारी क्या राय है सो कहो। इस पर सबने यही कहा कि परमात्मा सब अच्छा ही करता है। तुम निर्दोष हो। जैसे जल के बीच कमल और पत्थर के बीच अग्नि है उसी प्रकार आप हमारे बीच हैं। अपने को दशोरा का राज्य संभाल लेना चाहिए। यह कहकर वे जूनागढ़ से रवाना होकर दशोर में पहुंचे। वहां के राज्य कर्मचारी उसमें हर्षपूर्वक मिले। इन ब्राह्मणों ने अपना दान-पत्र भी दिखाया। इस पर उन कर्मचारियों ने ग्रामवासियों को इकट्ठा किया और उस पत्र को पढ़कर सुनाया तथा दशोर राज्य का सब भेद बताया। राज्य कर्मचारियों ने कहा कि यह दशपुर राज्य दस लाख का है। आप यहां निर्भय होकर राज्य करो। यह कहकर उन्होंने यह राज्य ब्राह्मणों को सौंप दिया तथा वे सब अयोध्या की ओर चल दिये। इन ब्राह्मणों ने चार लाख का परगना अपने कुटुम्ब वालों को दिया तथा अस्सी हजार की जागीर का पट्टा हालूजी हाड़ा को दिया तथा इन्हें अपना रक्षक (सेनापति) नियुक्ति किया। ये दोनों राज्य कार्य देखने लगे। हालू हाड़ा साढ़े तीन सौ पैदल और सौ अश्वपति सेना से नीति-पूर्वक राज्य की सेवा करते थे।

नोट- (यह जनश्रुति कई कारणों से सत्य नहीं मानी जा सकती। संभवतः यह घटना छठी शताब्दी के बाद की है। जिसका सम्बन्ध राजा दशरथ से जोड़ दिया गया हो। दूसरे विवरण में जिस राजा दशरथ देव का नाम आया है वह भी संभवतः यशोधर्म्मन के बाद ही गद्दी पर बैठा हो जिसने यज्ञ कराया हो जिसका सम्बन्ध अयोध्या के राजा दशरथ से जोड़ दिया गया हो। फिर हालूहाड़ा ने बारहवीं शताब्दी के अन्त में दशोरा वंश को बचाया था इसलिए यह प्रथम सेनापति हालूजी हाड़ा न होकर हाड़ा वंश का अन्य कोई व्यक्ति होना चाहिए।)

(-शेष अगले अंक में)

दीपक के दीवाने

लोग दीपक के दीवाने
सिर्फ इसलिये नहीं कि
अंधेरा हटाता है
वरन् इसलिये कि
टिमटिमाते हुए भी
प्रेरणा देता है
संघर्ष की
जलता तो खुद है
आलोकित करता है लोक
जहां तक दृष्टि देख पाती है
प्रशस्त करता है पथ जो लुप्त हो
चुका था
तथा प्राप्त करता है लक्ष्य
आओ दीप वन्दना करें
आगे बढ़ नवसृजन करें
शुभकामना करें।

-व्रजेन्द्र नागर
251 श्री मंगल नगर, इन्दौर

प्रबोधिनी एकादशी

व्रतो के प्रभाव से आत्मा शुद्ध होती है। संकल्प शक्ति बढ़ती है, बुद्धि-विचार तथा ज्ञानतन्तु का विकास होता है। अन्तः स्थल में ईश्वर के प्रति भक्ति, श्रद्धा का संचार होता है।

कार्तिक शुक्ल एकादशी प्रबोधिनी (देवउठनी) के नाम से मानी जाती है, चातुर्मास पूर्ण होने के उपरान्त इस एकादशी का विशेष महत्व है और यह हिन्दू धर्मा वलंबियो की प्रमुख है। इस दिन से मंगल कार्यो का प्रारंभ होता है। वराह पुराण के मतानुसार इस दिन एक वेदी पर सोलह आर का कमल पुष्प बनाया जाता है उसे नवीन श्वेत वस्त्र से आच्छादित कर चार पीतल कलश स्थापित किये जाते हैं। बीच में भगवान विष्णु की स्वर्ण या पीतल की मूर्ति स्थापित की जाती है। विधि अनुसार कलश में फूल तथा स्वास्तिक बनाकर विष्णु देव को नवीन पोशाक पहनाकर पुरुषसुक्त से पूजन की जाती है।

रात्रि में जागरण किया जाता है। घण्टाध्वनि, नगाड़ा, मृदंग बजाये जाते है। आरती उपरान्त पुष्पाजंली देकर भक्तों में चरणामृत प्रसाद वितरित किया जाता है। पांच ब्राह्मणों को भोजन कराकर कलश तथा देवमूर्ति अर्पण की जाती है। विष्णु पुराण, मदनरत्न धार्मिक ग्रन्थ में इस एकादशी कृत्य का विधान है।

भगवान विष्णु आषाढ़ मास शुक्ल पक्ष एकादशी को शयन करते हैं इस एकादशी का नाम देव शयनी एकादशी है तथा कार्तिक मास शुक्ल पक्ष की एकादशी को उठ जाते है इसलिए इस का नाम प्रबोधिनी है। भगवान कभी सोते नहीं है लेकिन वैष्णवमातानुसार ''यथा दे हे तथा देवे'' मानने वाले उपासकों को शास्त्रोक्त विधान अपनाना होता है। शयन करते हुए हरि को जगाने के लिये स्त्रोतपाठ, भगवतकथा, भजन द्वारा मुग्ध किया जाता है।

अन्त में सिद्ध मंत्र का उच्चारण करते हैं-

उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविन्द, त्यज निंद्रा जगत्पते।
त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत सुप्तं भवेदितम् ।।
उस्थिते चेष्टो सर्वमुक्तिष्ठोतिष्ठ माधव।
गता मेघा वियच्चेव निर्मलं निर्मला दिश।।

शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशव।

भगवान विष्णु की सविधि पूजा करके आरती उपरान्त पुष्पाजंली देकर

भक्त मण्डली को चरणामृत, प्रसाद वितरित करते हैं। वराह पुराण में उल्लेख है कि जिस समय वामन भगवान बलि से 3 पग भूमि लेकर बिदा हुए थे उस समय दैत्यराज बलि ने वामन भगवान को रथ में विराजमान कर रथ चलाया था। इस प्रकार व्रतीजनों को विष्णु आराधना करके देव को जगाने की परम्परा है। भगवान हरि योगनिद्रा को त्यागकर प्रत्येक प्रकार की क्रिया करने में प्रवृत्त हो जाते हैं और प्राणी मात्र का पालन पोषण और संरक्षण करते हैं।

-प्रस्तुतिकर्त्ता -
सौ. रुद्रकान्ता रावल
155-ए, तुलसी नगर, इन्दौर

समझो जानों दीवानों

अभी अभी विस्फोट क्या हुआ
भीड़ भरे इलाके में चीख पुकार
कुछ घायल व कुछ मारे गये
हर ओर दहशत फैली चिथड़ों सी
एक ओर निरीह बच्चा पड़ा था
उसमें हरकत हुई और उठ बैठा
आंखों में आंसू चेहरा सूजा हुआ
रक्त बिन्दु से सजा था जो उसके न थे
चीखा निरीह क्या दोष है मेरा
अंजाना था भयावह स्थिति से बोला
अस्तित्व दिखाने का कैसा तरीका है
क्यों मानवता को छोड़ते हो नृशंस
समाधान का ये मार्ग राक्षसी है
अबोधों के साथ त्रासदी बेमानी
किसे डराना चाहते हैं धृतराष्ट्र को
या दुशासन को जो अंजान नहीं
आतंक फैलाने वालों डरते क्यों हो
चेहरा तक नहीं दिखाते सिर फिरे
तुम्हारी नस्ल को ही मिटाना होगा
तभी मिट सकेगी घृणित प्रक्रिया
शान्ति की भाषा तुम्हे समझनी नहीं
क्रान्ती को मौसी मान गोद बैठे हो
पड़ोसन मां कभी नहीं हो सकती
मां को मां समझो जानो दीवानों

-व्रजेन्द्र नागर

म.प्र. में ''मॉडल केमिस्ट'' से सम्मानित
Megha Shree
MEDICOES
(CHEMIST & DRUGIST)
D.L.No.: 20-21/126
GOVT. APPROVED MEDICAL SHOP
Air Condition Medical Shop
Opp.Govt.Ayurvedic Hospital, 38, Station Road, RAU-453 331, Phone:0731-4055227, Mo.98932-57273

जीवन साथी परिचय सम्मेलन
24 दिसम्बर को उज्जैन में

उज्जैन। कर्मण्ये वाधिकारस्ते माँ फलेशु कदाचन की पावन भावना के साथ हम सभी जिस आयोजन को करने का संकल्प लेते हैं जिसके सपने संजोते है उसे निःस्वार्थ भाव से पूर्ण करते हैं इस आधुनिक युग में हर शख्स इतना व्यस्त रहता है कि उससे कुछ समय छिनना आसान नहीं रहता फिर भी उज्जैन नागर समाज के प्रत्येक सदस्य अपना सब कुछ त्याग कर समाज को निःस्वार्थ अपनी सेवा देने के लिए तैयार हो जाते हैं। युवा बुजुर्ग, बच्चे महिलाए सभी उस आयोजन को सफल बनाने में जुट जाते है।

उज्जैन नागर समाज इसी कारण से अपनी एक अलग पहचान कायम कर सका है। मध्यप्रदेश में सांस्कृतिक व सामाजिक गतिविधियों का मुख्य केन्द्र नागर समाज उज्जैन ही रहा है चाहे परिचय सम्मेलन सामूहिक विवाह सन्त नरसी मेहता सहायतार्थ कोष प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन हो इनका जनक उज्जैन नागर समाज ही रहा है, यहां से सभी आयोजन प्रदेश के विभिन्न शहरो व कस्बों में आयोजित होने लगे। सामाजिक आयोजन का जनक होने के कारण उज्जैन नागर समाज जो भी आयोजन करता है वह श्रेष्ठतम रुप से सफल होता है. ऐसा ही आयोजन उज्जैन नागर ब्राह्मण परिषद उज्जैन नागर युवक परिषद, उज्जैन नागर ब्राह्मण महिला मण्डल के संयुक्त तत्वाधान में दि. 24 दिसम्बर 2008 को उज्जैन में जीवनसाथी परिचय सम्मेलन आयोजित होने जा रहा है। हमारी कोशिश है कि इस सम्मेलन में भारत वर्ष के प्रत्येक प्रान्त से हमें प्रत्याशियों के आवेदन प्राप्त हो परन्तु हम सफल तभी हो सकते है जब आपका सहयोग व मार्गदर्शन हमें प्राप्त हो। यह सम्मेलन आधुनिकता के इस युग में नागर ब्राह्मण समाज की आदर्श और अनुकूल जीवन प्रणाली की छाप भी हम पर छोड़ेगा।

-लव मेहता
(अध्यक्ष) म.प्र. नागर युवक परिषद उज्जैन

करुं तो क्या करुं?

लहर का सर से गुजरना भी न देखा जाए
और पानी का उतरना भी न देखा जाए।
उसको बर्दाश्त न थी एक खुशी मेरी
जिससे अब मेरा बिखरना भी न देखा जाए।
जा बसूं अपने वतन में उसे मंजूर नहीं
मेरा परदेश में मरना भी न देखा जाए।
दिल फटा जाता है जिसका मेरी बदहाली पर
उससे ही मेरा सुधरना भी न देखा जाए।
हौंसला मेरा बढ़ाना नहीं आता उसको
मेरा हालात से डरना भी न देखा जाए।

-मोहन शर्मा, देवास

जय हाटकेश सिर्फ नागर बंधुओं हेतु जय श्री कृष्ण
व्यापारी बनें मात्र 500/-रुपए से शुरू करें...
हमारे उत्पादन
* जालिम-एक्स मलम
* जालिम-एक्स लिक्विड
* जालिम-एक्स लोशन
* पंचसुधा
* वामा क्रीम
* मेकाडो बाम
* अंजू बाम
* पेन ऑफ ऑईल
* पेन क्योर आइंटमेंट
* हजम टेबलेट
* अंजू कफ सायरप
* अर्शोमृत टेबलेट
* सुगम चूर्ण
* पाचक चूर्ण
* नारी रसायन
आप हमारे उत्पादन MRP. से आधे दाम पर प्राप्त करें और MRP.पर बिक्री करें।
अधिक जानकारी हेतु संपर्क करे-
नवीन झा
Anju अंजू फार्मास्यूटिकल्स
111/112 अलंकार चेम्बर्स, रतलाम कोठी, ए.बी. रोड, इंदौर- 452001- (म.प्र.)
मोबाइल नंबर- 09425062415

जीवन में सुख-शांति के लिए मर्यादाओं का पालन अनिवार्य

पारिवारिक जीवन में मर्यादाओं का बहुत महत्व है, आवश्यकता इस बात की है कि सभी सदस्य अपनी मर्यादाओं में रहे। मर्यादा का अर्थ है स्वअनुशासन। कहा जाता है कि कायदे में रहोगे तो फायदे में रहोगे। हालांकि बच्चों को स्वअनुशासन या मर्यादा छोटी उम्र से ही सिखाने की चीज है इसके अलावा परिवार के बड़े सदस्य यदि मर्यादित रहे तो उसी परिपाटी को बच्चे भी आत्मसात करते है, तथा बड़े होने पर भी मर्यादित ही रहते हैं। विवाह होने से पूर्व युवा पीढ़ी के कार्यकलापों को हम नोटिस नहीं करते लेकिन विवाह के बाद बेटे का व्यवहार दुखदायी हो जाता है जब वह मर्यादाओं का पालन नहीं करता। दरअसल आज के खुले माहौल में बेटे-बहू घर से बाहर जाते वक्त या छोटी-बड़ी बातों में बड़ो से आज्ञा लेना तौहीन समझते हैं, लेकिन घर के बड़े-बुजुर्गों को यह बात खलती है। वे अपने बड़ों के साथ मर्यादा से रहें हैं तथा यहां तक कि उनके रिश्ते आदि की बात भी वरिष्ठजन ही तय कर देते थे, वे यह भी नहीं कह पाए कि हम लड़का या लड़की देखना चाहते हैं। मर्यादाओं का ह्रास शनैः शनैः होता गया और अब लड़के-लड़की स्वयं अपनी पसंद तय करने लगे तथा सम्बंध की बात होते समय यह कहने में उन्हें झिझक नहीं है कि हम आपस में बात भी करना चाहते हैं. मर्यादा के ह्रास की पूरी जिम्मेदारी युवा पीढ़ी पर भी नहीं है किन्तु उसका सबसे ज्यादा खामियाजा बड़े-बुजुर्ग भुगत रहें हैं। अनावश्यक प्यार के पैरों तले यदि मर्यादा को न कुचला जाता तो आज वृद्धाश्रम इतने आबाद नहीं होते, युवा पीढ़ी को यह समझना चाहिए कि बुजुर्ग अनुभव की जीती-जागती किताब है तथा अपना जीवन स्वर्णिम बनाना है तो न केवल बड़े-बुजुर्गों को मान देना पड़ेगा बल्कि उनकी सलाह भी माननी पड़ेगी। आजकल शिक्षा का अधिक चलन है, बेटे-बेटियां अपने माता-पिता से कहीं ज्यादा पढ़े हैं, उनके पास जीवीकोपार्जन हेतु ज्ञान तो है लेकिन अनुभव नहीं है, उसी ज्ञान के गुरुर में उन्होंने मर्यादा को छोड़ दिया तथा सब कुछ होने के बावजूद उनके जीवन में शांति नहीं है। आशा की जाती है कि न तो बड़े अपनी मर्यादा छोड़े न बच्चे। क्योंकि हमारे पूर्वजों ने मर्यादित जीवन की जो नींव रखी है वह सबके फायदे की है। उन्होंने जो नियम बनाए थे वे सुखी एवं शांतिमय जीवन के आधार थे। वे जब अपने बच्चों का सम्बंध करने जाते थे तो गुण एवं खानदान देखते थे. नई पीढ़ी अपने जीवन साथी में आकर्षक डील-डोल और सुन्दरता देखती है। वे अपनी पत्नी से घर के बड़े-बुजुर्गों के सामने बात करने की हिम्मत नहीं करते थे बगैर इजाजत बाहर जाना तो बहुत दूर की बात है। माना कि समय में परिवर्तन आया है तथा वे सब बातें अब सम्भव नहीं है किन्तु जहां तक सम्भव हो मर्यादाओं को बनाए रखें यह सोचकर कि जीवन की सार्थकता, शांति एवं सुख मर्यादित जीवन में ही है।

-सुरेन्द्र मेहता, उज्जैन

मर्यादा का सुख-शांति से वास्ता

मर्यादा से सुख एवं शांति कैसे मिल सकती है? दरअसल बड़े-बुजुर्गों की अवहेलना कर हम स्वज्ञान के आधार पर जो निर्णय लेते हैं, वे अनुभवों के अभाव में हमें सफलता की सीढ़ी पर नहीं चढ़ा पाते, परिणाम स्वरुप हमारे जीवन में सुख-शांति नहीं आ पाती। वैसे भी बुजुर्गों की अवहेलना कर हमारे द्वारा जो कदम उठाए जाते हैं उनकी सार्थकता के अभाव में आत्मा का कचोटना तथा अंतर्मन में असंतोष से मर्यादा के अभाव में सुख शांति के बजाए जीवन दुःखमय हो जाता है। अतः जीवन में मर्यादा का समावेश करें। बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। उनके अनुभवों का लाभ लें एवं जीवन को सुखमय बनाएं।

ESTD : 1991 REGD.No. 101410638/PMT/ल.क-1
Ph.No.(Works)07662-253735

KANPUR ELECTRONICS

Opp.SWAGAT BHAVAN,SUPER MARKET, REWA (M.P.)
CONTACT PERSON :
(A) SHRI KISHAN PANDYA,CHIEF EXE.(TECH)
Mob.No.094253-57898
(B) SMT.MALINI PANDYA,PROPRITOR,
Mob.No.094258-74798
(C) SHRI JAWAHARLAL K. PANDYA, FOUNDER
Ph. No. 07662-253535, Mob.No.098270-88329

पं. सतीश नागर

महर्षि सांदीपनी वेद विद्या प्रतिष्ठान से कर्मकाण्ड एवं वेद अध्ययन की डिग्री प्राप्त

गृह शांति, कालसर्प शांति, गृह शान्ति (वास्तु पूजन) विवाह कार्य, जप, यज्ञोपवित संस्कार, दुर्गा पाठ, पितृ शांति, सर्वदेव यज्ञ, प्राण प्रतिष्ठा एवं समस्त धार्मिक अनुष्ठान शास्त्रोक्त, वैदिक पद्धति से सम्पन्न कराये जाते है।

74, बोहरा बाखल, खाराकुआ, उज्जैन (म.प्र.) फोन 0734-2552627, मो. 9827291390, 9826988983

शिक्षा जगत के पितृ पुरुष

मुखिया श्री मनमोहनदासजी मेहता

शाजापुर। श्री गोर्वधननाथ मंदिर हवेली के मुखिया श्री मनमोहनदास मेहता परम भागवत पुष्टि ग्रन्थों के अध्येता एवं उंद्धत विद्वान थे। आप श्री गोवर्धन दासजी मुखिया एवं श्यानीबाई मेहता मुखियानी जी के कनिष्ठ पुत्र थे। इनके ज्येष्ठ भ्राता स्व. श्री कृष्णदासजी मुखिया थे। मनमोहनजी ने अपनी ज्येष्ठ माता सरजुबाई मुखियानीजी से पुष्टिमार्गीय सेवा विधि सीखी एवं पुष्टि संस्कारों को ग्रहण किया। आपने पुष्टि ग्रंथों का अध्ययन एवं मनन भी किया आप पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय के मर्मज्ञ विद्वान एवं गहन चिन्तक थे। आपने अपना सारा जीवन श्री ठाकुर गोवर्धन नाथजी की सेवा में व्यतीत किया। ठाकुरजी की भी आप पर असीम कृपा सदैव बनी रही। शासकीय सेवा में रहते हुए भी कभी आपको शाजापुर छोड़कर बाहर नहीं जाना पड़ा।

माध्यमिक विद्यालय हरायपुरा व माध्यमिक विद्यालय महालक्ष्मी शाजापुर में ही पूरा सेवाकाल गुजर गया। आप शाजापुर शिक्षा जगत के पितृपुरुष माने जाते थे। वैसे बालकृष्ण को भी गोपाल से द्वारकाधीश होने तक कष्ट कण्टकों के कण्टकाकीर्ण मार्गों से गुजरना पड़ा था वैसे ही मनु को मदन व मनमोहन मेहता बनने तक नाना जन्जालों व दुर्गम पर्वतों से गुजरना पड़ा। श्री गोवर्धननाथजी शरण व श्री कृष्ण शरणं मम के अखण्ड जप का वरदहस्त सदा सहायक बना रहा। शाजापुर नगर के परम वैष्णव स्व. श्री गोपालदासजी झालानी, स्व. श्री जमनादासजी व स्व. श्री दामोदर दासजी झालानी के आशीर्वाद का साथ सदा बना रहा। स्व. श्री कन्हैयालालजी चौधरी, स्व. श्री रामगोपाल चौधरी, स्व. श्री बाबूलालजी नीमा श्री वल्लभदासजी झालानी, श्री हरि नारायणजी नीमा (उज्जैन) जो पुष्टि सम्प्रदाय की अमूल्य धरोहर मान्य हैं, इनका सदैव पूर्ण सहयोग मिलता रहा हैं। स्व. वल्लभदासजी मेहता, नारायणजी मेहता श्री गोकुलदासजी शर्मा द्वारकादासजी बजाज, सिद्धनाथजी नवाब श्री सिद्धनाथ जी सीकामोरी, श्री हजारीलालजी एवं श्रीमती सिंगारबाई गुप्ता एवं रतनलालजी जड़िया एवं श्री मोहनभाई सोनी जैसे परम भगवदीय वैष्णव जन की छत्र छाया में बाल्यावस्था में ही गोवर्धननाथजी की मुखिया के रुप में सेवा प्रारम्भ की जो ताजीवन चलती रही।

यथा नाम तथा गुण आप स्व नामानुकूल अत्यन्त सौम्य शान्त स्वभाव थे, रेल की पटरी की तरह गृहस्थ धर्म एवं प्रभु सेवा में उभयपथ पर समान्तर सन्तुलित रुप से चलते रहे प्रभु सेवा में अर्थाभाव कभी बाधक नहीं रहा। अपने प्रधानाध्यापक कार्यकाल में नागर धर्मशाला को शासकीय स्कलू हेतु अधिकतम किराये पर दिलवाने में आपकी सक्रिय भूमिका रही। अपने सेवा पूजन के व्यस्त समय के उपरान्त भी वे समाज को समय देते। समाज के वरिष्ठजन होने से आप हाटकेश्वर देवालय न्यास के न्यासी थे। नागर समाज के सदस्य श्री मुखियाजी से मार्ग दर्शन प्राप्त करते रहते थे, समाजजन को कार्य करने एवं उन्हें आगे बढ़ाने में उनकी सर्व श्रेष्ठ भूमिका रही। उन्होंने 58 वर्ष तक सत्संग किया अन्तिम समय में भी अपने अनुयायी को अपने समान ही सत्संगी वैष्णव बना दिया।

मुखियाजी ठाकुरजी की भोग सामग्री सुन्दर सिद्ध करवाते व पान बीड़ा स्वयं सिद्धकर पधराते थे जो विशेष हुआ करता था महाराज श्री हो वैष्णव आपसे प्राप्त पान बीड़े की प्रशंसा करते नहीं थकते थे पूज्य श्री मुखियाजी ने न केवल जीवन पर्यन्त श्री गोवर्धन नाथ की चरण वंदना की अपितु वैष्णव सम्प्रदाय को पूर्ण विश्वसनीय मार्ग दर्शन भी प्रदान किया साथ ही साथ अपने परिवार को भी वैष्णव संस्कार प्रदान किये उनके पुत्र श्री नरेन्द्र कुमार मेहता स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर प्रो. सुरेश कुमार मेहता शासकीय महाविद्यालय में प्राध्यापक, मुकेश कुमार मेहता सबइंजीनियर, पी.एच.ई. निकुन्ज कुमार मेहता (यू.टी.आई.) योगेश मेहता (व्यापार) तथा भतीजे ब्रजगोपाल मेहता एवं सुरेन्द्र कुमार मेहता भी अपने बन्धुओं के साथ श्री ठाकुरजी की तन्मयता से सेवा करते हैं।

-नरेन्द्रकुमार मेहता
शाजापुर (म.प्र.)

मेहता कम्यूनिकेशन
बी.एस.एन.एल. द्वारा अधिकृत
सिम प्रीपेड, पोस्टपेड प्लान परिवर्तन
आईडिया, एयरटेल, स्मार्ट, टाटा, रिम एवं
बी.एस.एन.एल. सुविधा उपलब्ध
समस्त कंपनियों के रिचार्ज वाउचर उपलब्ध है
लैंडलाइन कनेक्शन ब्राडबैंड कनेक्शन

श्री किसान कृषि सेवा केन्द्र
कृषि दवाइयां, बीज एवं कृषि
उपकरण के विश्वसनीय विक्रेता
21-ए, क्षीरसागर शापिंग कॉम्पलेक्स, उज्जैन
फोन 0734-2563035, मो. 9425094581,
9425380483, 9425917018

सांई बाबा के परम भक्त (१)

हरि सीताराम दीक्षित (काका साहेब दीक्षित, बापू साहेब दीक्षित)

साई बाबा के समकालीन भक्तों की सूची में अगला नाम मुंबई के सुप्रसिद्ध वकील श्री एच.एस. दीक्षित का है। दीक्षित जी का साई दरबार में इतना महत्वपूर्ण स्थान पाने का मुख्य कारण यह था कि वे शिरडी साई बाबा संस्थान की उन्नति तथा विकास के लिये जीवन-पर्यन्त समर्पित रहे। वे संस्थान के संस्थापक व मानद सचिव के रुप में अपनी मृत्यु के क्षण (5-7-1926) तक सेवा में संलग्न रहे। दीक्षित जी ने लाखों भक्तों के हृदय में साई भक्ति की ज्योति जलाई, जिससे भक्त शिरडी दर्शन के लिए उत्कंठित और प्रेरित होते रहे। उन्होंने संस्थान से साई लीला नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया।

यह पत्रिका बाबा के उपदेशों व वचनों को भक्तों तक पहुंचाने का एक उत्तम माध्यम बनी। इसके प्रथम संस्करण में दीक्षितजी व अन्य 151 भक्तों के अनुभव प्रकाशित हुए। दीक्षित जी का जन्म सन् 1864 में खंडवा के एक उच्च कुलीन नागर ब्राह्मण परिवार में हुआ। आरंभ से ही वे प्रतिभा संपन्न छात्र थे। फलस्वरुप इन्होंने F.A.,B.A.,L.L.B.की परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त किए और जल्दी ही मुम्बई के प्रसिद्ध वकीलों में अपनी एक खास पहचान बनाई। कानून की पत्रिकाओं तथा प्रेस में उनका नाम योग्य वकील के रुप में आने लगा। इस कारण जनता व सरकार दोनों ही उनके कार्यों से बहुत प्रभावित हुए। वे अनेक राजनैतिक, सामाजिक व नगर पालिका सम्बन्धी गतिविधियों से जुड़े हुए थे तथा इंडियन नेशनल कांग्रेस के नेता सर फिरोजशाह मेहता के शिष्य थे। वे सन् 1901 से मुंबई व्यवस्थापक सभा के चुने हुए सदस्य थे। बाबा की शरण में आने के बाद उन्होंने यह पद त्याग दिया। उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय के सभासद, पब्लिक नोटरी (जनता के लिखित पत्रों को प्रमाणित करने वाला अफसर) का कार्य भी किया। अपने निडर भाषण देने की शैली के कारण दीक्षित काफी प्रसिद्ध थे। एच.एस. लार्ड सन्धुरस्ट (जिन्होंने लोकमान्य तिलक को गिरफ्तार कराने का मुकदमा लड़ा था) के बिदाई समारोह में दिए जाने वाले भाषण का विरोध करके दीक्षित ने बहुत प्रसिद्धि पाई थी। व्यस्तता के बावजूद भी वे अपनी कुशलता का उपयोग कर कई संस्थाओं का मार्ग-दर्शन करते थे। सन् 1904 में संपन्न हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मुंबई अधिवेशन में इन्होंने सचिव पद का दायित्व निभाया था। इस सम्मेलन की अध्यक्षता दादा भाई नौरोजी ने की थी। अपनी योग्यता व लोकप्रियता के फलस्वरुप वे राज्य के कमिश्नर के पद तक पहुंच पाए। वे ऐसे निष्काम देश भक्त थे, जिन्होंने कभी अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया। तभी तो लोक हित के लिए उन्होंने सहर्ष नगर पालिका के उच्च पद से त्यागपत्र दे दिया। सन् 1906 में इंग्लैंड यात्रा के दौरान एक दुर्घटना में उनकी एक टांग घायल हो गई। अथक प्रयास के बावजूद उनकी टांग ठीक नहीं हो पाई। दो-चार कदम लंगड़ा कर चलने में भी उन्हें कष्ट होता था।

दीक्षित का लंगड़ा कर चलना सभी को भद्दा व अजीब लगता था। साथ ही उन्हें घरेलू, राजनैतिक, सामाजिक व कानूनी कार्यों को पूरा करने में कठिनाई होती थी। दीक्षित को अब बाहर आने-जाने में शर्म महसूस होती थी और उनका मन जीवन के इन माया-मोह के जालों से घृणा करने लगा था। फलस्वरुप उनके मन में कुछ धार्मिक व नेक कार्य करने की इच्छा जागी। सन् 1909 में नाना साहेब चांदोरकर ने दीक्षित को बाबा के दर्शन हेतु शिरडी जाने की सलाह दी और कहा कि बाबा ही उन्हें टांग की समस्या से मुक्ति दिलवाएंगे। उसी वर्ष दीक्षित परिषद के चुनाव के सिलसिले में सरदार काका साहेब मिरीकर के घर गए। मिरीकर एक साई भक्त थे व उनके घर में श्री सांई बाबा का बड़ा चित्र भी था। बाबा के चित्र को देखकर दीक्षित की बाबा के पास शिरडी जाने की इच्छा और भी प्रबल हो गई। (शेष अगले अंक में)

प्रस्तुति - श्रीमती शारदा मंडलोई
इन्दौर

अभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ

दवे परिवार

इन्दौर (म.प्र.)

"यह जो हरा है"

रविन्द्र व्यास के चित्रों की प्रदर्शनी

भोपाल। इन्दौर के पत्रकार एवं चित्रकार श्री रविन्द्र व्यास के चित्रों की प्रदर्शनी 11 से 17 अक्टूबर तक सरल आर्ट गैलरी में आयोजित की गई। जिसका उद्घाटन ख्यात चित्रकार अखिलेष ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में साहित्यकार, चित्रकार और कलाप्रेमी उपस्थित थे। रविन्द्र व्यास के चित्रों की एकल प्रदर्शनी में 2007 से 2008 के दौरान बनाए गए 40 चित्रों को प्रदर्शित किया गया। 'यह जो हरा है' शीर्षक से आयोजित प्रदर्शनी में अधिकांश चित्र हरे रंग से चित्रित किए गए थे। इन चित्रों में मुख्य रुप से प्रकृति के सौन्दर्य का चित्रण किया गया है। बकौल प्रसिद्ध चित्रकार अखिलेष कि रविन्द्र व्यास के चित्र प्रकृति का सहज चित्रण करते हैं। एक ही रंग से चित्र बनाना चुनौतिपूर्ण है जिन्हें श्री व्यास ने खूबसूरती से चित्रित किया है। रविन्द्र व्यास की एकल प्रदर्शनी को स्थानीय समाचार पत्रों में शानदार प्रतिसाद मिला। रवीन्द्र व्यास ने कहा कि हरा रंग मनोहारी होकर दुःख एवं अवसाद को सोख लेने में सक्षम है। हरा रंग खुशी का प्रतीक है इसलिए वह विगत चार वर्षों से केवल हरे रंग से चित्र बना रहे हैं. उनकी अगली प्रदर्शनी 1 से 6 दिसम्बर तक जयपुर जवाहर कला केन्द्र में पश्चात उज्जैन में कालीदास अकादमी और फिर इन्दौर में आयोजित होगी। शुभकामनाएं।

-श्रीमती मीना त्रिवेदी, इन्दौर

१५०० से अधिक दमा रोगी लाभान्वित

उज्जैन। इन्दिरा नगर स्थित श्रीकृष्णा आरोग्य हास्पीटल एवं रिसर्च सेन्टर के तत्वावधान में 13 वां निःशुल्क दमा रोग चिकित्सा शिविर आयोजित कर 1500 से अधिक दमा रोगियों को औषधि युक्तखीर वितरित की गई एवं 200 रोगियों का कर्णवेधन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे श्रीमान राघवदासजी महाराज, विशिष्ट अतिथि श्री टी.एन. भट्ट (मुख्यप्रबंधक स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर), श्री एस.एस. नागर, योगेन्द्र कौशिक, वीरेन्द्रसिंह परिहार, डॉ. व्ही. के. पौराणिक श्री सुरेन्द्र मेहता 'सुमन' प्रधान सम्पादक दैनिक अवन्तिका ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

"कुछ लोग ऐसे होते हैं"

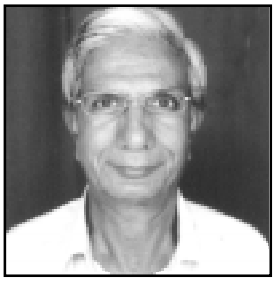

उज्जैन। बोलचाल की भाषा में लिखा साहित्य लोकप्रिय होता है। इस दृष्टि से वरिष्ठ व्यंग्यकार एवं हास्य कवि श्री अभिमन्यु त्रिवेदी गड़बड़ नागर की रचनाओं की भाषा हिन्दुस्तानी है। वर्तमान में व्यंग्यकार होने के अनेक खतरे हैं। व्यंग्यकार उन खतरों का चतुराई से सामना करता है। व्यंग्य वह पावन गंगा है जो समाज की गंदगी को रचनाओं से दूर करने का प्रयास करता है एवं मन के प्रदूषण को दूर करता है। उक्त विचार मुख्य अतिथि के रुप में विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. रामराजेश मिश्र ने व्यक्त किये। प्रसंग था सुपरिचित हास्य कवि एवं व्यंग्यकार गड़बड़ नागर के काव्य संकलन "कुछ लोग ऐसे होते है" का लोकार्पण का। होटल आश्रय में आयोजित इस सारस्वत आयोजन के विशिष्ठ अतिथि व्यंग्यकार प्रो. बी.एल. आच्छा ने कहा कि नागर की रचना अपने ढंग की अनूठी एवं सावन के सहेरे की तरह मन भावन है। उनकी भाषा जन सामान्य की भाषा है। आडम्बर प्रदर्शन से दूर नागर जी का सृजन पैनापन और अनूठापन लिये है। अतिथि आकाशवाणी निर्देशक एवं संगीतविद् श्री प्रकाश शुजालपुरकर ने श्री नागर के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर चर्चा करते हुए कहा श्री नागर सहज एवं सरल हैं। वास्तव में कुछ लोग ऐसे होते है कृति ऐसी बन पड़ी है। जिसमें लोकप्रियता की संभावना शत-प्रतिशत है, उनकी प्रस्तुतिकरण की अपनी शैली है जो श्रोताओं पर प्रभाव छोड़ती है।

शाजापुर से पधारे नागर ब्राह्मण समाज के प्रांताध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास ने कहा कि समाज की विसंगतियों पर चोट करने का कमाल लम्बी साधना के बाद भी नागर ने प्राप्त किया है। मैं इस अवसर पर उनकी सृजन क्षमता में निरंतर वृद्धि हो ऐसी प्रभु हाटकेश्वर महादेव से प्रार्थना करता हूं।

-संजय त्रिवेदी
संयोजक लोकार्पण समारोह, उज्जैन

दस दिवसीय उत्सव में सबकी भागीदारी

खंडवा। हाटकेश्वर नागर मंडल खंडवा द्वारा दस दिवसीय श्री गणेशोत्सव समारोह सानन्द धार्मिक उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ दिनांक 3 से 14 सितम्बर तक धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आयोजन किए गए। 3 सितम्बर को श्रीमती गायत्री देवी मेहता द्वारा प्रदत्त श्री गणेश प्रतिमा का चल समारोह निकाला गया। 4 सितम्बर को भजन संध्या 5 सितम्बर को हरेराम सकीर्तन, 6 सितम्बर को महिला सभा तथा रामायण पाठ, विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित हुई। पारितोषिक वितरण एवं आरती के बाद प्रतिमा विसर्जन हुआ। अध्यक्ष श्री देवीदास पोत्दार सहित सभी पदाधिकारियों के सहयोग एवं समाज बंधुओं के उत्साह से आयोजन सफल रहा।

समाजसेवा ही जिनका ध्येय था..

श्रीमती विद्यादेवी व्यास

शाजापुर। कौशल्याजी भगवान राम से कहती है कि- हे पुत्र! यदि केवल पिता ने तुम्हें वन जाने के लिए कहा है, तो तुम अपनी माता मुझको उनसे बड़ी समझकर वन मत जाओ। परन्तु यदि माता (कैकेयी) तथा पिता दोनों ने तुम्हें वन जाने के लिए कहा है, तो वन सैकडों अवध के समान है, तुम अवश्य जाओ। माँ की ममता यदि अपने बच्चे को अपनी ओर आकर्षित करती है तो समय आने पर उन्हें कर्त्तव्य से विमुख भी नहीं होने देती। म.प्र. नागर परिषद के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास की माताजी श्रीमती विद्यादेवी व्यास भी माँ कोशल्या के समान धर्मपारायण तथा कर्त्तव्य पारायणता की मूर्ति थी। शरद पूर्णिमा के शुभ दिन दिनांक 14 अक्टूबर 08 को उनका निर्वाण इस बात का घोतक है कि अपनी प्रिय आत्माओं को भगवान शुभ दिन आमंत्रित करते हैं। श्री पुष्करलालजी मेहता की सुपुत्री श्रीमती विद्यादेवी का विवाह शाजापुर निवासी श्री बद्रीनारायणजी व्यास (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) के साथ हुआ था। शिक्षा क्षेत्र में आपकी रुचि सदैव बनी रही संयोगवश वर्ष 1972 में शिक्षा विभाग में नौकरी भी लग गई किन्तु उस नौकरी के बजाय उन्होंने नागर समाज के विद्या मन्दिर का संचालन करना उचित समझा। वर्ष 1980 से 2004 तक विद्या मंदिर का संचालन एवं समाजसेवा में ही उन्होंने अपनी सार्थकता सिद्ध की। साथ ही सम्पूर्ण परिवार को समाजसेवा का ही ध्येय सिखाया। पारिवारिक संस्कार ही मनुष्य को सत्कार्य की ओर प्रवृत्त करते है।

जय हाटकेश वाणी परिवार की ओर से माँ को विनम्र श्रद्धांजलि।

प्रथम पुण्य स्मरण

स्व. श्रीमती प्रतिभा शर्मा
(संगीत शिक्षिका केन्द्रीय विद्यालय नेपा नगर)
दिनांक 28 नवम्बर 2008

श्रद्धावनत् - वीरेन्द्र शर्मा (पति), अपूर्व शुभांग (पुत्र) श्रीमती गीता शर्मा (सास), सौ. गायत्री मेहता, शक्ति नागर, रेखा मिश्रा (ननद), गजानन आशीष (मातृछाया के पीछे) आनन्द नगर, खंडवा

(नोट- श्रीमती प्रतिभा शर्मा की स्मृति में 29 नवम्बर 2008 को नेपानगर में संगीत निशा आयोजित है।)

श्री जयन्तिलाल नागर की नौंवी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि

झाबुआ। आजाद पत्रकार संघ अध्यक्ष श्री हेमेन्द्र नागर एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक में कार्यरत श्री गिरीश नागर के पिताजी श्री जयन्तीलालजी नागर की नौंवी पुण्यतिथि पर श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। ज्ञातव्य है कि स्व. श्री नागर जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक में लीपिक के पद पर कार्यरत थे एवं पूरी ईमानदारी एवं लगन के साथ कार्य करते हुए ही उनका अचानक देहावसान हो गया था। उनका जीवन संघर्षमय रहा तथा हमेशा सत्य की लड़ाई लड़े। जीवन पर्यन्त समाजसेवा धार्मिक कार्यक्रमों में भागीदारी की। जय हाटकेश वाणी परिवार की ओर से श्रद्धांजलि।

एक संघर्ष का दुःखद अंत

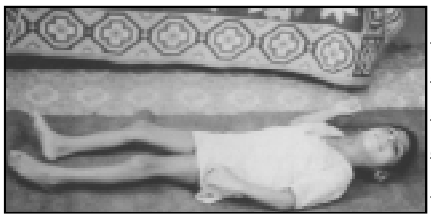

देवास। ग्राम देथली बड़ी जिला मन्दसौर के निवासी श्री मनोहरलाल मिश्रा के पौत्र एवं देवेन्द्र मिश्रा अध्यापक जवाहर नगर देवास के सुपुत्र शैलेन्द्र मिश्रा का स्वर्गवास दिनांक 20-09-08 को हो गया था, वह जन्म से ही विकलांगता से ग्रसित था। उसने 29 वर्षों तक जीवन से संघर्ष किया। अंतिम यात्रा में नागर समाज किया। अंतिम यात्रा में नागर समाज के सदस्यों एवं गणमान्य नागरिकों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रद्धांजलि : श्री लौकेश पौराणिक

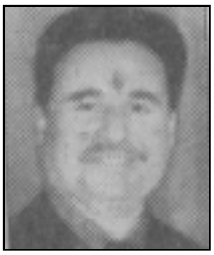

देवास। विक्रम सीमेंट (खोर) में कार्यरत श्री लोकेश पौराणिक का निधन 26 अक्टोबर हो गया। उत्तरकार्य एवं ब्रह्मभोज 7 नवम्बर 08 को माँ शारदा मंदिर कैलादेवी मंदिर के पास ए.बी. रोड, देवास पर रखा गया है। शोकाकुल परिवार को ढांढस बंधाने के प्रति प्रकाश पौराणिक निकुंज मेहता, अनिल पौराणिक, प्रियंक, राघव, विनायक, अंकित, ने आभार व्यक्त किया है।

कैपसूल में भी उपलब्ध
हाजिर जवाब घरेलू दवा
प्राण सुधा®
पेट दर्द, उल्टी, दस्त, जी घबराना, चक्कर आना, लू लगना,
अजीर्ण, गैस, ट्रावेलिंग सिकनेस, मंदाग्नि, दाढ़दर्द,
पित्ती उछलना आदि के लिये उपयोगी

शाजापुर जीवन साथी परिचय सम्मेलन में शामिल प्रतिभागी

कृपया 101 से 139 के प्रतिभागियों की सूचि अक्टूबर 08 अंक में देखें ।

क्र. (140) अरुणकुमार आर.बी. त्रिवेदी
जन्म दि. 21-4-1974 समय प्रातः 8.20 उदयपुर
शैक्षणिक योग्यता- बी.कॉम. बी.बी.ए.
व्यवसाय- व्यापार
सम्पर्क- जे. 128, एल.आई.जी. कालोनी रविशंकर नगर, इन्दौर (म.प्र.) फोन 0731-654817

क्र. (141) मुकेशकुमार आनन्दीलाल नागर
जन्म दि. 10-12-1981
शैक्षणिक योग्यता 10 वीं
व्यवसाय- कृषि
सम्पर्क- ग्राम व पोस्ट धतरावदा तहसील जीरापुर जिला राजगढ़ मो. 9753533809

क्र. (142) विशाल प्रहलाद जोशी
जन्म दि. 11-8-1984, रात्रि 2.00 खेरोट (राज.)
शैक्षणिक योग्यता- बी.ए.
व्यवसाय- खेती व सब्जी का व्यवसाय
सम्पर्क- भगीसपुर तह. पिडावा पो. सुनेल जिला झालावाड़ फोन 07434 29505

क्र. (143) पवनकुमार मणीशंकर नागर
जन्म दि. 7-2-1986, सुतार खेड़ा
शैक्षणिक योग्यता- 12 वीं
कार्यरत- कृषि, पंडिताई
सम्पर्क-ग्राम व पो घुन्सी, जि. शाजापुर मो. 9977710574

क्र. (144) अरुण सत्यनारायण नागर
जन्म दि. 25-6-1986 प्रातः 10.30, लालाखेड़ी (कुल्मी)
शैक्षणिक योग्यता - हाई स्कूल
व्यवसाय- पण्डिताई एवं कृषि फार्म
सम्पर्क- ग्राम लालाखेडी (कुल्मी) पो. घुन्सी तह. गुलाना जिला शाजापुर, मो. 942595476

क्र. (145) अनिल राधारमण नागर
जन्म दि. 9-5-1985 शाजापुर
शैक्षणिक योग्यता- शास्त्री द्वितीय वर्ष (वेद)
सम्पर्क- मु.पो. देंदला जिला शाजापुर फोन 245022

क्रं. (146) प्रकाश स्व. श्री हरिवल्लभ नागर
जन्म दि. 1-1-1989
शैक्षणिक योग्यता- 10वीं
सम्पर्क- पंथ पिपलई पो. पंथ पिपलई, जिला उज्जैन फोन 55806613

क्र. (147) राकेश राधेश्याम नागर
जन्म दि. 26-5-1986, नागदा
शैक्षणिक योग्यता - 8 वीं पास
व्यवसाय- कृषि
सम्पर्क- ग्राम चौहानी, जिला शाजापुर
मो. 9977128663

क्र. (148) मुकेश राधेश्याम नागर
जन्म दि. 24-7-1982
शैक्षणिक योग्यता- 8 वीं पास
व्यवसाय- कृषि
सम्पर्क-ग्राम चौहानी, जि. शाजापुर मो.9977128663

क्र. (149) संदीप राधेश्याम नागर
जन्म दि. 4-2-1988
शैक्षणिक योग्यता- 10वीं पास
कार्यरत- कर्मकाण्ड
सम्पर्क-ग्राम चौहानी जि. शाजापुर, मो. 9977128663

क्र. (150) पूनमचन्द्र मनोहरलाल नागर
जन्म दि. 7-8-1986
शैक्षणिक योग्यता- 8वीं
सम्पर्क-ग्राम चौहानी जि. शाजापुर, मो.975324623

क्र. (151) सिद्धनाथ रामचन्द्र नागर
जन्म दि. 9-5-1985, समय रात्रि 8.30, चौहानी
शैक्षणिक योग्यता- 11 वीं
व्यवसाय- नौकरी महाराष्ट्र (मिल)
सम्पर्क- चौहानी पो. चौसला (कुल्मी)
जिला शाजापुर (म.प्र.) मो. 9827841263

क्र. (152) जितेन्द्र दिलीप नागर
जन्म दि. 10-4-1986, रतलाम
शैक्षणिक योग्यता - बी.कॉम फाईनल
व्यवसाय- अध्ययनरत
सम्पर्क- ग्राम कस्तुरबा नगर सुमंगल गार्डन, रतलाम

क्र. (153) चेतन आनन्दीलाल नागर
जन्म दि.1986, समय दोप. 2.00, रतलाम (म.प्र.)
शैक्षणिक योग्यता - हायर सेकेण्डरी
व्यवसाय - अध्ययनरत
सम्पर्क- ग्राम उणी पो. हाट पिपल्या, तह. जावरा जिला रतलाम (म.प्र.) फोन 07412 405144

क्र. (154) भावेश राजेन्द्र नागर
जन्म दि. 6-10-1981, रात्रि 11.22, नरसिंहगढ़
शैक्षणिक योग्यता-बी.ई. (मेकेनिकल) सी.-डी.ए.सी.
कार्यरत- सोफ्ट. इंजी.
सम्पर्क- 61 सागपुर (बाय पास रोड) नरसिंह गढ़
जिला राजगढ़ (ब्यावरा) मो. 9301880913

क्र. (155) पंकज महेश नागर
जन्म दि. 22-8-1982 समय दोप. 2.15, उज्जैन
शैक्षणिक योग्यता- बी.काम. एल.एल.बी.
कार्यरत- नौकरी अकाउंटेन्ट
सम्पर्क- 2, भोपाल बायपास (सागपुर) नरसिंहगढ़
मो. 9753031044, 07375 316431

क्र. (156) संदीप विष्णुदत्त नागर
जन्म दि. 20-11-1981 समय दोप. 2.35, बेरछा
शैक्षणिक योग्यता - बी.ई. (इलेक्ट्रीकल्स)
व्यवसाय - नौकरी (इंजीनियर)
सम्पर्क- 407- **L.I.G.** सेकन्ड इन्दिरा नगर, उज्जैन
मो. 9229429130, 0734 258147

क्र. (157) पंकज नारायण नागर
जन्म दि. 26-11-1984, प्रातः 3.20, पेटलावद
शैक्षणिक योग्यता- बी.ए.
व्यवसाय- दुकान
सम्पर्क- मंगल भवन के पास, गोपाल कालोनी, झाबुआ मो. 9425925087

क्र. (158) आलोककुमार स्व. श्री संतकुमार नागर
जन्म दि. 21-1-1975, प्रातः 4.33, राजपुर जि. बड़वानी
शैक्षणिक योग्यता- एम.ए. हिन्दी
व्यवसाय- नौकरी पंचायत
सम्पर्क- पुलिस थाने के सामने जुलवानिया रोड, राजपुर मो. 998145185

क्र. (159) रजनीकान्त महेशचन्द्र नागर
जन्म दि. 2-12-1983, प्रातः 7.35, बांसवाड़ा
शैक्षणिक योग्यता- 12 वीं
व्यवसाय- व्यवसाय
सम्पर्क- 106, सिद्धेश्वर कालोनी, हंसा लाज के पास छिंच-बांसवाड़ा
मो. 9425944457, 9301479232

क्र. (160) कपिल महेशचन्द्र नागर
जन्म दि. 4-1-1988, प्रातः 7.58, छिंच बांसवाड़ा
शैक्षणिक योग्यता- 10 वीं
व्यवसाय- व्यवसाय
सम्पर्क- 106, सिद्धेश्वर कालोनी, हंसा लाज के पास छिंच-बांसवाड़ा
मो. 9425944457, 9301479232

क्र. (161) अशोक बसन्तीलाल नागर
शैक्षणिक योग्यता- 8 वीं
व्यवसाय- कृषि
पता- ग्राम आक्या चौहानी, जिला शाजापुर (म.प्र.)

दीपावली एवं नववर्ष की
शुभकामनाएँ

मालवमाटी में माँ सरस्वती के वरद् पुत्र
पं. श्री कमलकिशोरजी नागर

मोहन शर्मा
सभापति जनपद पंचायत देवास मो. 98273-98235

क्र. (162) राकेश आनन्दीलाल मेहता
जन्म दि. 7-3-1972, समय- दोप. 12.30, महू
शैक्षणिक योग्यता- बी.एस.सी. (एजी.)
व्यवसाय- नौकरी प्रायवेट कम्पनी
सम्पर्क- 162, शिव विहार कालोनी वेटनरी कालेज के सामने, महू जिला इन्दौर मो. 09413666892

क्र. (163) शैलेन्द्र ब्रह्मानन्द मेहता
जन्म दि. 3-4-1983, आगर
शैक्षणिक योग्यता- हायर सेकेन्डरी
व्यवसाय- किराना व गल्ला
सम्पर्क- ग्राम व पोस्ट छड़ावद तह. तराना, जिला उज्जैन मो. 9977105640, 0736266113

क्र. (164) सूर्यप्रकाश बालकृष्ण मेहता
जन्म दि. 16-3-1980, प्रातः 8.10, शाजापुर
शैक्षणिक योग्यता- एम.ए. (हिन्दी साहित्य) संस्कृत
व्यवसाय- नौकरी
पता- एम.-2, दीनदयाल उपाध्याय नगर लालघाटी, शाजापुर, मो. 9926611963, 9424060500

क्र. (165) जयेश किरणकांत मेहता
जन्म दि. 17-7-1981, समय- रात्रि 2.13, उज्जैन
शैक्षणिक योग्यता- बी.ई. टेली कम्यूनिकेशन **(Dis.in MCSM & Banking)**
व्यवसाय- नौकरी सोफ्टवेयर इंजीनियर
सम्पर्क-37, सुभाष नगर, उज्जैन मो. 9893189787

क्र. (166) नीरज शैलेन्द्र रावल
जन्म दि. 2-10-1-1979, प्रातः 9.30, शाजापुर
शैक्षणिक योग्यता- एम.काम. एम.जे.एम.सी
व्यवसाय- नौकरी अकाउन्टेन्ट दैनिक भास्कर
सम्पर्क- **M.I.G.** ए-1/18 महानंदा नगर, देवास रोड, उज्जैन
मो. 9826520610, 0734 2520789

क्र. (167) विशाल मणीकान्त मेहता
जन्म दि. 3-9-1983, समय- 1.00 बजे, अभयपुर
शैक्षणिक योग्यता- बी.काम.
व्यवसाय- व्यवसाय
सम्पर्क- ग्राम व पोस्ट अभयपुर, जिला शाजापुर, मो. 9926394276, 9754908990

क्र. (168) राजेन्द्र मांगीलाल मेहता
शैक्षणिक योग्यता- 8 वीं
व्यवसाय- व्यवसाय किराना दुकान
सम्पर्क- ग्राम कुकंड़ी व पोस्ट अभयपुर, जिला शाजापुर मो. 9977105628, 07364-250121

क्र. (169) राजेन्द्र रामचन्द्र नागर
जन्म दि. 11-7-1980
शैक्षणिक योग्यता- 10 वीं
व्यवसाय- किराना व्यवसाय
सम्पर्क- ग्राम गुलावट पो. करोड़िया तह. देपालपुर मो. 9009245193

क्र. (170) सुनील स्व. श्री दुर्गाशंकर मेहता
शैक्षणिक योग्यता- 8 वीं
व्यवसाय- कृषि
सम्पर्क- ग्राम कुकड़ी पो. अभयपुर, जिला शाजापुर, मो. 9977031290

क्र. (171) धर्मेन्द्र स्व. श्री दुर्गाशंकर मेहता
शैक्षणिक योग्यता
व्यवसाय- गायत्री इलेक्ट्रानिक कुंकडी
सम्पर्क- ग्राम कुकड़ी पो. अभयपुर, जिला शाजापुर

क्र. (172) अनिल स्व. श्री दुर्गाशंकर मेहता
शैक्षणिक योग्यता- 12 वीं
व्यवसाय- नौकरी शिक्षक
सम्पर्क-ग्राम कुकड़ी पो. अभयपुर, जि.शाजापुर मो.9977031290

क्र. (173) रुपेश उर्फ डोगरेंलाल महेश नागर
जन्म दि. 26-2-1983, प्रातः 10.15, उज्जैन
शैक्षणिक योग्यता- एम.काम. फायनल
व्यवसाय- कपड़े की दुकान
शैक्षणिक योग्यता- एम.ए. हिन्दी साहित्य
व्यवसाय- जनरल स्टोर्स
सम्पर्क- उर्दू पुरा नागर सेरी म.नं. 10, गली क्रं. 8 उज्जैन मो. 9329699441, 2554515

क्र. (174) कपिल अशोक कुमार व्यास
जन्म दि. 6-8-1983, प्रातः 7.01, शाजापुर
शैक्षणिक योग्यता- बी.काम.
व्यवसाय- शेयर एवं कमोडिटीस
सम्पर्क- 21, मालीपुरा पिपलरांवा, तह. सोनकच्छ जिला देवास मो. 9302222622, 07270 317100

क्र. (175) पवन (शैलेन्द्र) परमानन्द नागर
जन्म दि. 14-10-1985, प्रातः 11.30, मक्सी
शैक्षणिक योग्यता- बी.काम. तृतीय वर्ष
सम्पर्क- 16-आई.ए. लोकनायक नगर एरोड्रम रोड, इन्दौर, मो. 9229656565

क्र. (176) दीपक परमानन्द नागर
जन्म दि. 14-6-1984, प्रातः 5.30, मक्सी
शैक्षणिक योग्यता- बी.एस.सी. और एम.सी.ए.
सम्पर्क- सम्पर्क- 16-आई.ए. लोकनायक नगर एरोड्रम रोड, इन्दौर, मो. 9993444559

क्र. (177) अनिलकुमार गंगाराम नागर
जन्म दि. 23-7-1984, समय- रात्रि 12.00, टीकोन जिला शाजापुर
शैक्षणिक योग्यता- हा. से. (कर्मकाण्ड प्रथमा व मध्यमा) उज्जैन
व्यवसाय- कृषि
सम्पर्क- ग्राम व पो. पचलाना जिला शाजापुर मो. 9981449017, 07361 244621

क्र. (178) सुनील कुमार गंगाराम नागर
जन्म दि. 5-8-1983, समय- 10.42, ग्राम व पो. पचलाना, जिला शाजापुर
शैक्षणिक योग्यता- हा. से. एवं (आचार्य पद कर्मकाण्ड उज्जैन)
व्यवसाय- कृषि
सम्पर्क- ग्राम व पो. पचलाना जिला शाजापुर मो. 9981449017, 07361 244621

क्र. (179) विजयकुमार गोर्वधनलाल नागर
जन्म दि. 10-1-1989, समय 3.20, पचलाना जिला शाजापुर
शैक्षणिक योग्यता- 12 वीं
व्यवसाय- कृषि
सम्पर्क- ग्राम टिकोन तह. नलखेड़ा, जिला शाजापुर, मो. 9826491518

क्र. (180) आवेश नरेन्द्र व्यास
जन्म दि. 23-12-1982, इन्दौर
शैक्षणिक योग्यता- एम.काम.
व्यवसाय- नौकरी
सम्पर्क- 30/1, स्नेहलता गंज, इन्दौर
मो. 0731-2434874

क्र. (181) डॉ. सर्वेशकुमार श्रीकान्ताप्रसाद नागर
जन्म दि. 15-5-1980, दोप. 1.45, आगर मालवा
शैक्षणिक योग्यता-B.AM.S. आयु. चिकि. अधि.
व्यवसाय- नौकरी सिविल अस्पताल उज्जैन
सम्पर्क- के.पी. नागर ब्लाक कालोनी आगर मालवा, जिला शाजापुर
मो. 9893431265, 07362-259473

क्र. (182) प्रवीण कमलकुमार मेहता
जन्म दि. 3-12-1980, प्रातः 4.41, उज्जैन
शैक्षणिक योग्यता- बी.एस.सी.
व्यवसाय-नौकरी रिलायंस इंश्योंं. में सेल्स मैनेजर
सम्पर्क- एम-91, किटियानी कालोनी, मन्दसौर
मो. 9425107805, 07412-256122

क्र. (183) पवन गिरिजाशंकर नागर
जन्म दि. 2-10-1981, रात्रि 9.00 बजे, राऊ
शैक्षणिक योग्यता- 11 वीं.
व्यवसाय- आटा चक्की
सम्पर्क- 1019 नागर फ्लोर मील गांधी चौक राऊ, इन्दौर मो.9926052287, 0731-6538275

7 आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ) 7
हस्तरेखा विशेषज्ञ, वास्तुविद्, कुंडली मिलान
(ज्योतिष विद्या से बतायें भविष्य फल का आधार श्रद्धा व विश्वास है।)
10, बीमानगर, खजराना रोड़, इन्दौर फोन 4060184, मो. 9425963751

1. मुदित राजेन्द्र व्यास
आयु. 27 वर्ष
शिक्षा- एम.बी.ए.
कार्यरत- टी.एन.एस (मार्केट रिसर्च कम्पनी, नई दिल्ली)
सम्पर्क- 12, ब्राह्मण गली, उज्जैन
फोन 0734-2553760, मो. 97544-57975

2. तन्मय राजेन्द्र व्यास
आयु- 28 वर्ष
शिक्षा- बी.ई. एम.बी.एम.
कार्यरत- मल्टीनेशनल कंपनी (गुडगांव)
सम्पर्क- 12 ब्राह्मण गली उज्जैन
फोन 0734-2553760, मो. 97544-57975

3. प्रियंक जोशी
जन्मतिथि, 4 मार्च 1980
शिक्षा- एम.सी.ए.
कार्यरत- सत्यम कम्प्यूटर, पूना
सम्पर्क- 152, बजरंग नगर, इन्दौर
फोन 0731-2555988

4. गिरीश स्व. जयन्तिलालजी नागर

आयु 26 वर्ष
शिक्षा- बी.ए.
कार्यरत-जि सह. केन्द्रीय बैंक मर्यादित
सम्पर्क- भोजमार्ग, झाबुआ
मो. 9301125255, 9424805828

5. हेमेन्द्र स्व. जयन्तिलाल नागर

आयु- 28 वर्ष
शिक्षा- हायर सेकेण्डरी
कार्यरत- पत्रकारिता
सम्पर्क- भोजमार्ग, झाबुआ
मो. 9301125255

6. नवीन संजय जोशी

जन्म दि. 22.9.1982
शिक्षा- बी.कॉम. कम्प्यूटर कोर्स
कार्यरत- दैनिक भास्कर समूह
असि. मैनेजर आय पांच अंको में,
सम्पर्क- ए.एम.2, 134, पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर, सुखलिया इन्दौर मो. 9826951212

❋ वैवाहिक युवति ❋

1. निधि भुवनेश्वर भट्ट
जन्मतिथि- 15-01-1987
शिक्षा- 12 वीं आर्ट्स, बी. ए. अध्ययनरत
सम्पर्क- 33, गोखले मार्ग हरीगंज खंडवा (म.प्र.)
फोन 0733-2224668

2. कु. तुलिका पं. लक्ष्मी शंकर व्यास
जन्मतिथि- 30-04-1984
शिक्षा- एम.एस.सी (कम्प्यू.)
पीजीडीसीए अध्ययनरत
सम्पर्क- श्री भीलट बाबा मन्दिर
17, ब्राह्मणपुरी, खंडवा
फोन 9926183775, 9827510566

सुयश

नागर समाज का गौरव - परीक्षित जोशी

प्रसिद्धी, धन की आशा, सम्मानित नौकरी व प्रतिष्ठा की खातिर युवा पीढ़ी विदेश की ओर भाग रही है, लेकिन उच्च अध्ययन के प्रति समर्पित भावना व दृढ़ता के साथ प्रयत्न कर सफलता प्राप्त करने का उदाहरण बिरला ही होता है। युवा परीक्षित जोशी 22 वर्षीय बी.ई. (श्री अनिल कुमार जोशी एक्झी. सीनियर सेल्स अधिकारी गोदरेज कं के पुत्र/स्व. श्री जानकीलाल जोशी के नाती) ने स्वप्रेरित प्रयास से जी.आर.इ + टी.ओ.एफ.एल (ग्रेज्युएशन रेकार्ड व टेस्ट ऑफ इंग्लिश एज फारेन लेग्वेज परीक्षाएं) उच्चांकों (90 प्रतिशत) में सफलता अर्जित कर स्नातकोत्तर उच्च अध्ययन हेतु विदेशी विश्व विद्यालयों में प्रवेश की उपलब्धि हांसिल की। परीक्षित जोशी को मास्टर ऑफ साइन्स डिग्री हेतु कम्प्यूटर साइन्स विषयान्तर्गत न्यूयार्क युनिवर्सिटी, न्यूयार्क (अमेरिका) में प्रवेश प्राप्त हुआ। परीक्षित जोशी सितम्बर 2008 में अध्ययन हेतु न्यूयार्क प्रस्थित हो गये।

परीक्षित जोशी ने माइक्रोसॉफ्ट सर्टिफाइड प्रोफेशनल्स के ज्ञान सहित बी.ई (इन्फरमेशन टेक्नॉलॉजी), मन्दसौर इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी (M.I.T.) मन्दसौर (R.G.P.V) से हॉल ही में उत्तीर्ण कर ली है।

इस प्रकार विदेशी विश्वविद्यालय में उच्चाध्ययन के लिए उपलब्धि परीक्षित के लिए विशिष्टता अपरोक्ष अवसर के साथ उसके परिवार एवं नागर समाज के गौरव अनुभव करने का उपयुक्त दृष्टांत है। बधाईयों के साथ वह अपना संकल्प सफलता के साथ पूर्ण करें। समाज की आशा व परम शक्ति का वरद्हस्त रहें।

प्रस्तुति- पी.आर. जोशी
528, उषा नगर, एक्सटेंशन, इन्दौर

ऐसे खिलेगी मुस्कान

गर्मी के मौसम के दौरान होंठ अकसर सूख जाते हैं। उनकी पपड़ी को कुरेंदे नहीं और दिन में उन पर पांच-छह बार लिप बाम लगाएं। मक्खन में केसर मिलाकर रख दें। इस मिश्रण को होठों पर लगाने से वे मुलायम व लाल बनेंगे। होंठ अगर काले हों, तो ग्लिसरीन में गुलाब की पत्तियां मसल कर लगाएं। गर्मियों में ठंडा व मीठा ज्यादा खाया जाता है। इसलिए दांतों की सफाई का खास ध्यान रखें। जरुरत पड़ने पर स्केलिंग या ब्लीचिंग भी करवाई जा सकती है।

-श्रीमती दुर्गा शर्मा

DEALING IN
VIDEOCON
PAGARIA
ONIDA
SAMSUNG
ORIENT
khaitan
SINGER
Lords
WILSON

Mahesh Mehta

Mehta & Sons

SHOW ROOM

970, Sudama Nagar, Indore Ph.: 2481996, Mobile No. 98266-33350, 98277-99265

ठंडा मतलब पौष्टिकता में शून्य....।

अगर बात करें पौष्टिकता की तो ठंडे में यह शून्य ही है। न तो प्रोटीन, न विटामिन, नहीं कोई मिनरल्स इसमें होता है। सभी चिकित्सकों के पास उपलब्ध पुस्तक में प्रत्येक खाद्य पदार्थ में मौजूद प्रोटीन्स, विटामिन्स इत्यादि का विवरण दिया होता है। ठंडे के विवरण में आपको सिर्फ कार्बो-कैलोरी मिलेगी। वह भी उसमें मौजूद चीनी के कारण। गुड़ के मुकाबले इस चीनी को पचाने में पैंक्रियास को 6 गुना अधिक जोर लगाना पड़ता है। अगर बेचारा समय से पहले चूक गया तो इन्सूलिन आपकी मजबूरी हो जाएगी। अधिक सेवन से डॉ. एन डब्ल्यू वाकर के अनुसार कैंसर भी हो सकता है। कुल मिलाकर निरापद या स्वास्थवर्द्धक तो नहीं ही है। अब देखें प्रकृति पर्यावरण यानि जल, जंगल, जमीन पर इससे क्या प्रभाव पड़ता है। हमारे देश का 2/3 हिस्सा डार्क जोन घोषित किया जा चुका है। पानी की भयंकर कमी है। ठंडे की एक बोतल तैयार करने में करीब 10 से 12 लीटर पानी खर्च होता है। ठंडा बनाने वाली कम्पनियों की पानी की सालाना खपत 300 अरब लीटर है। एक प्लांट द्वारा एक दिन में उपयोग किया जाने वाला पानी 75000 व्यक्तियों एवं खेती के लिए पर्याप्त है। केरल के प्लाचीमाड़ा में कोला प्लान्ट लगने के कारण भूजल काफी नीचे चला गया और कुंए सूख गये हैं। महाराष्ट्र के बड़ा तहसील के कुन्दुरा गांव में लगे प्लान्ट ने तो पूरी वेतरणा नदी ही सुखा दी है। बलिया में भी कमोबेश यही हालात है। इस मुफ्त में किये जा रहे अतिदोहन के अलावा प्रमुख समस्या 'जल प्रदूषण' है। डॉ. मार्क यानिक एवं डॉ. एस.जनक रंजन के अनुसार प्लाचीमाड़ा गांव का पानी पीने तो क्या, नहाने और कपड़े धोने के काबिल भी नहीं रहा है। समस्त पानी जहरीला हो चुका है। आप तय करें कि यह ''लेहर-पेप्सी है या जहर-पेप्सी''। प्लॉन्ट से निकलने वाले प्रदूषित जल और स्लज का दूसरा कुप्रभाव पड़ा है आस-पास की जमीन पर जो खेती के लायक ही नहीं रही है। जो कुछ पैदावार हो पा रही है वह जहरीली है। ग्रीन पीस इण्डिया और केरल प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार प्लान्ट से निकले स्लज में लेड़, केडमियम, क्रोमियम, फॉस्फोरस, जिंक इत्यादि भारी धातुऐं अत्यधिक मात्रा में पायी गयी हैं। वेलकम टू कैंसर। आदमी को भी और अन्नदाता धरती को भी।वायु प्रदूषण भी कुछ कम नहीं होता है इनसे। उत्पादन प्रक्रिया तो प्रदूषणकारी है ही, वितरण में भी प्रदूषण कम नहीं है। अकेले प्लाचीमाड़ा से प्रतिदिन 85 ट्रक भरकर कार्बन पेट्रोल-डीजल का धुआँ उड़ाते हुए देश के कोने-कोने में पहुंचते हैं। हर साल अरबों बोतलें लाने ले जाने में कितनी डाई ऑक्साइड छोड़ी जाती है इसका आकलन अभी बाकी है। इसी डीजल के लिए अमरीका की चिरोरी भी करनी पड़ती है। तेल पूल का बढ़ता घाटा देश की अर्थव्यवस्था पर बोझ बढ़ाता चला जाता है। विदेशों में जाकर हाथ फैलायें वह भी जहर पीने के लिए। घोर कलयुग का प्रभाव है तभी तो हम स्वयं की अकल के पीछे लट्ठ लेकर दौड़ रहे हैं। असली बात अब शुरु करते हैं यानि जेब और रोजगार पर कितना भारी है ठंडा। मात्र 70 पैसे लागत वाली बोतल आपको 10/- रुपये में (ट्रेन और सिनेमा में 12 से 15 रुपये में) बेची जाती है। 6000 करोड़ के सालाना टर्न ओवर से अरबों रुपया बाहर चला जाता है। यही पैसा आपको उधार और पाकिस्तान को सहायता के रुप में वापस दिया जाता है। इसी ठंडे के कारण लेमन सोड़ा उद्योग सहित देशी ठंडे के कई उद्योग समाप्त होने से लाखों किसान, ठेले वाले, छोटो व्यापारी बेरोजगार हो चुके हैं।

(शेष अगले अंक में)

संजीव झा
सी-50 तलवण्डी, कोटा
मो. 09414966414

शुभकामनाओं सहित
शर्मा ब्रदर्स
ब्रोकर, कॉटन सीड, केक एंड आईल
4/2, मुराई मोहल्ला, श्री निकेतन, शॉप नं. 1 छावनी, इन्दौर
फोन 2706115, 2707115, मो. 94240-09615, 9826088115, 9826081115, 9926088115, 9009562115

❐ संरक्षक
श्रीमती निर्मला कमलकिशोरजी नागर
सेमली-मालवा फोन 9329144644
श्रीमती शारदा विनोद मंडलोई
इन्दौर फोन- 0731-2556266
श्रीमती आशा ओमप्रकाशजी मेहता
भोपाल 07552552100
श्रीमती प्रभा शिवप्रसादजी शर्मा
इंदौर 07312450018
श्रीमती रमा सुरेंद्रजीमेहता 'सुमन'
उज्जैन 07342554455
श्रीमती अंजना सुरेंद्रजी मेहता
शाजापुर 07364229699

❐ प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा
❐ संपादक
सौ.रुचि उमेश झा
❐ सह सम्पादक
सौ.मीना प्रवीण त्रिवेदी
सौ.शीला जगदीश दशोरा
सौ.तृप्ति निलेष नागर
सौ.मंजू रविन्द्र व्यास
सौ.सोनिया विवेक मंडलोई
सौ.वन्दना विनीत नागर
सौ.निशा पं.अशोक भट्ट
सौ.बिन्दु प्रदीप मेहता
सौ.ज्योति राजेन्द्र नागर
सौ.ममता मुकुल मंडलोई
सौ.आशा योगेश शर्मा

सम्पादकीय

कुछ नया हो जाए...

दीपावली पर्व के पश्चात सब कुछ नया-नया सा है। नया वर्ष आने को तैयार है, घर को लीप-पोत कर नया जैसा कर लिया है। नई वेश-भूषा धारण की है। इस सारी नवीनता का संकेत है कि हमारे जीवन में भी कुछ नया हो, ''बीती को बिसार दें, आगे की सुधि लें।'' जब नया वर्ष आया है, तो इस पड़ाव पर बैठकर हम विचार करें कि व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर क्या हमारा जीवन केवल पालन-पोषण के लिए है या उसके और भी मायने है। हमारे पूर्वजों ने जब त्यौहारों का सृजन किया था तो यही सोचकर कि मानव के जीवन में उत्साह की जरुरत समय-समय पर पड़ती है। उसी प्रकार नवीनता से आत्मावलोकन का भाव पैदा होता है। पुरानी गलतियों एवं त्रुटियों को सुधारकर ही जीवन में खुशहाली लाई जा सकती है। सफलता जिस चिड़िया का नाम है वह हमारे आंगन में ही चहक रही है। उसका आभास तो हमारी अनुभूति पर निर्भर है। दीपावली पर जलाए जाने वाले दीप कोई बाहरी आवरण को प्रकाशमान बनाने के लिए नहीं है अपितु वे अंदरुनी तौर पर विराजमान आत्मा को प्रकाशमान करने के लिए है। अतः जब सब तरफ नया-नया है, टिमटिमाते दीपों का प्रकाश है तो आओ हम भी आत्मावलोकन करें अपनी कार्यकुशलता एवं व्यवहार से इहलोक को संवारने के साथ परलोक को भी सुधारें क्योंकि हमें जो मानव शरीर प्राप्त हुआ है वह सतकर्म कर स्वर्ग में जाने के लिए मिला है अतः संसार के व्यवहार में हम मुख्य उद्देश्य भी नहीं भूलें। जब नए-नए की बात चल रही है तो हमारे प्रदेश में भी नई सरकार बनने जा रही है। हम ब्राह्मण एकता की बात करते हैं तो यह भी ध्यान रहे कि अपने चुनाव क्षेत्र से यदि ब्राह्मण प्रत्याशी चुनाव मैदान में हो तो उसे विजयी बनाने का प्रयास करें। ऐसे समय दल या पार्टी को महत्व नहीं दें। दूसरी बात यह है कि कितनी भी उलझनें क्यों न हो अपने मताधिकार का उपयोग अवश्य करें। तो आओ नवीनता का स्वागत करें, नवीन विचारों से जीवन को सार्थक बनाएं। अपने जीवन में कुछ नया करें और स्वयं प्रकाशित होकर इस समाज तथा राष्ट्र को प्रकाशमान करें।

-संगीता शर्मा

विनम्र अनुरोध-

ज्ञातव्य है कि जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन प्रतिमाह 6 तारीख को किया जाकर डाक प्रेषित की जाती है। उन सभी सदस्यों को पत्रिका नियमित भेजी जा रही है, जो 250 रु. जमा कर तीन वर्ष के लिये सदस्य बन चुके है। डाक विभाग की लापरवाही से यदि आपको पत्रिका प्राप्त न हो तो कृपया सीधे कार्यालय (0731) 2450018 पर फोन करें। पत्रिका प्राप्त न होने पर पुनः भेजी जाती है। आपके शहर में समाज की गतिविधि से सम्बंधित समाचार एवं फोटो अवश्य भेजें उनका प्रकाशन किया जाएगा जबकि वैवाहिक, जन्मदिन, पुण्यतिथि एवं बधाई सम्बंधि समाचार केवल सदस्यों के ही प्रकाशित किए जाते हैं। पत्रिका का प्रकाशन समाज को जागरुक बनाने तथा आसपास चल रही गतिविधियों से वाकिफ कराने के लिए है अतः पूर्णतः सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें।

सदस्यता आवेदन पत्र

मैं.....

पूरा पता (पिनकोड सहित).....

.....

मासिक जय हाटकेश वाणी का तीन वर्ष हेतु सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित शुल्क 250/-रु. नगद/चैक/ ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते पंजाब नेशनल बैंक A/C नं. 0212002100245085

श्रीमान संपादक महोदय

मासिक जयहाटकेश वाणी

20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर

फोन. 2450018 फैक्स-2459026 मो.9425063129

Email-manibhaisharma@gmail.com
jayhotkeshvani@gmail.com

नागर समाज के त्यौहार एवं व्यंजन विधि

देवउठनी या प्रबोधिनी एकादशी
तुलसी विवाह

तिथि- कार्तिक शुक्लपक्ष एकादशी

माहात्म्य- इसे ''देवउठनी एकादशी'' कहते हैं। कारण देवशयनी एकादशी के चार महीने बाद देव उठते हैं। इस दिन 'नारायण-तुलसी विवाह' हुआ था। इसी दिन से सभी शुभ कार्य विवाह इत्यादि आरम्भ हो जाते हैं। यह बिना देखा मुहूर्त है।

व्रत- इस दिन फलाहार खाकर सारा परिवार व्रत रखता है।

पूजा- आज के दिन सांयकाल गोधूलि बेला में 5 या 9 चौकी का कलश का साथिया बनाकर उसमें कुमकुम व हल्दी से रंग भर दिया जाता है। उस पर तुलसी जी व लड्डू गोपाल को चौकी पर रख कर शाम को विवाह कराया जाता है। देवदिवाली मनाई जाती है, घर में दीये जलाये जाते हैं। तुलसी जी को पानेतर या चुन्दड़ी, नथनी (वेल) पहना कर सजाया जाता है। सारे घर में दीप सजा कर पूजा व आरती के बाद फलाहार का भोग लगाया जाता है। पूजा भोग के बाद पटाखे, चरखी, अनार भी चलाये जाते हैं। उसके बाद भगवान के पालके को सात बार उठा कर यह कहने की प्रथा है। '' बोर गंडेरी आँवला, उठो देव सांवरा''

भोग- भोग में फलाहार का भोग लगाया जाता है मीठे में विशेष रामदाने (राजगीरा) के लड्डू का महत्व है।

विशेष- कुछ घरों में विवाह मंडप (चौरी) खड़िया से बनाई जाती है। इस दिन गन्ने का विशेष महत्व है। इस दिन नई सब्जियां भी पूजा में रखी जाती है जो इस दिन के बाद से खाई जाती है।

साबूदाना मोतीचूर

सामग्री

बड़ा साबूदाना	-	250 ग्राम
चीनी	-	750 ग्राम
घी	-	200 ग्राम
पिसी छोटी इलायची	-	200 ग्राम
गुलाब इत्र	-	2/3 बूंद
पीला रंग	-	थोड़ा सा
केसर	-	3/4 पत्ती
पानी	-	आवश्यकतानुसार

विधि-

1. साबूदाना 4/5 घण्टे तक पानी में भिंगोए जब दाना नरम हो जाए (कुछ दाने पीले पानी में भी भिगों दें) तब पानी निथार कर कपड़े पर फैला दें।
2. थोड़ा सूख जाने पर घी में तल ले।
3. एक तार की चाशनी बनाकर तले साबूदाने गरम-गरम डाले।
4. ऊपर से इलायची, गुलाब का इत्र मिलाकर, केसर डालकर तुरन्त थाली में जमा दे एवं टुकड़े काट कर व्यवहार करें।

विशेष-

1. चाशनी बनाने के लिए चीनी भीग जाय उतना ही पानी डालिए।

चीनी के गुणे
गुणा (पाग्या हुआ)

सामग्री-

मैदा	-	250 ग्राम
घी (मोयन के लिए)	-	5 बड़े चम्मच
घी (तलने के लिए)	-	आवश्यकतानुसार
पानी	-	आवश्यकतानुसार

विधि-

1. मैदा में मोयन डालकर पानी से कड़ा गूंथें।
2. मोटी एवम् बड़ी रोटी बेलकर चाकू से लम्बी-लम्बी पट्टियां काटें।
3. हर एक पट्टी को अपनी ऊंगली में लपेटकर गोल गोल छल्ले बनाएँ एवम् मध्यम आँच पर गरम घी में सुनहरे होने तक तले।

विशेष- छल्ले के दोनों सिरे अच्छी तरह चिपकाएँ जिससे गुणे खुले नहीं।

चासनी

सामग्री-

चीनी	-	300 ग्राम
पानी	-	150 ग्राम
दूध	-	2 छोटे चम्मच

विधि-

1. चीनी में पानी डालकर उबाले जब चीनी घुल जाये फिर दूध डाले एवं ऊपर आये मैल को निकाले।
2. चासनी दो तार की बनाएँ।
3. तले गुणों को चाशनी में पागें।

विशेष-

1. चासनी को ऊंगली एवम् अंगूठे के बीच में लेने से एक तार आए तो एक तार की पतली, दो तार आए तो दो तार की एवम् थाली में डालते ही सूखने लगे तो (बताशा पड़ती) गाढ़ी चाशनी बनती है। बताशा पड़ती चाशनी के लिए चीनी - 400 ग्राम, पानी - 100 ग्राम।

2. एक तार की चाशनी के लिए 300 ग्राम चीनी में 400 ग्राम पानी मिलाया जाता है।

3. $1^{1/2}$ तार की चासनी में $1^{1/2}$ किलो चीनी में $1^{1/2}$ कि.ली. पानी मिलाया जाता है।

बैकुण्ठ चतुर्दशी

तिथि - कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्दशी

माहात्म्य- इस दिन गंगा या यमुना नदी में दीपक प्रवाहित किए जाते हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

इस पखवाड़े में कोई त्यौहार या व्रत नहीं पड़ता।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष दाऊ जी की पूर्णिमा

तिथि- मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष पूर्णिमा

माहात्म्य- इस दिन भगवान सत्यनारायण की पूजा व कथा होती है।

भोग- भोग में विशेष खीर व मेथी की पूरी के साथ सब्जी और मन पसन्द रसोई बनाते हैं।

खीर

सामग्री-

दूध	-	1 किलो
बासमती चावल	-	50 ग्राम
चीनी	-	250 ग्राम
पीसी छोटी इलायची	-	1 छोटा चम्मच
लौंग	-	4
तेजपत्ता	-	2
केसर	-	15 पत्ती
पिस्ता बादाम	-	इच्छानुसार

विधि-

1. पतीली में चारों तरफ थोड़ा घी लगाकर उसमें दूध, तेजपत्ता और लौंग डालकर उबालें।
2. चावल को दस से बारह मिनट पानी में भिगोकर निथार लें फिर दूध में डालकर पकाएं।
3. चावल और दूध में मेल आ जाय तब चीनी डालें और बराबर हिलाते रहें। आंच तेज रहे।
4. 8 से 10 मिनट तक बादामी रंग आने तक खीर को उबालें।
5. खीर को ठण्डी कर उसमें पीसी इलायची, भीगी और घुटी केसर, महीन कटी हुई पिस्ता और बादाम डालें।

विशेष -

1. पतीली में घी लगाने से दूध चिपकता नहीं है।
2. भीगे चावल में थोड़ा सा घी लगाकर दूध में डालने से दूध में चावल चिपकते नहीं है।
3. खीर के लिए भैंस का दूध, गोविन्दभोग, कामिनी और गुलाब खस चावल का उपयोग कर सकते हैं।
4. बादाम और पिस्ता को पानी में भिगोकर उसके छिलके निकालें और पतले-पतले टुकड़े काट कर गुलाबी सेंक कर डाले।
5. गाजर और लौकी की खीर भी इसी विधि से बनती है। 250 ग्राम गाजर या लौकी को छील कर कद्दूकस करें लौकी का पानी हाथ से दबाकर निकाल लें। और एक चम्मच घी में थोड़ी देर पका कर दूध में डालकर ऊपर की विधि से खीर बनाएँ।
   गाजर की खीर में चीनी 200 ग्राम पड़ेगी क्योंकि गाजर मीठी होती है।

मेथी की पूड़ी और पराठे (मेथी नी पूरी अने पोतला)

सामग्री-

गेहूं का आटा	-	400 ग्राम
बेसन	-	100 ग्राम
मेथी की पत्तियां	-	200 ग्राम
नमक	-	1 छोटा चम्मच
हल्दी	-	1/4 छोटा चम्मच
लाल मिर्च	-	1/2 छोटा चम्मच
तेल (छौंकने के लिए)	-	बड़ा चम्मच
तेल (तलने के लिए)	-	आवश्यकतानुसार
पानी	-	आवश्यकतानुसार

विधि-

1. मेथी को अच्छी तरह धोकर महीन काट लें।
2. तेल गरम कर मेथी को छौंक कर 1/4 छोटा चम्मच नमक, लाल मिर्च और हल्दी डालकर हिलाएँ और गैस बन्द कर ढंक दें।
3. आटे में नमक, बेसन और तेल सहित मेथी अच्छी तरह मिलाकर पानी से न ज्यादा नरम आटा गूंथे।
4. मेथी के आटे की छोटी-छोटी लोइयों को पूरी की तरह बेल कर सुनहरा तलें।

विशेष - 1. आटे में बेसन मिलाने से पराठे सौंधे बनते हैं किन्तु मेथी या बेसन की मात्रा घटाई भी जा सकती है।

2. मेथी के पराठे टमाटर की लौंजी या गाजर और लौकी की खीर के साथ भी अच्छी लगती है।
3. मेथी की पूरी सामग्री से मेथी के पराठे और टीकड़े, सादे टीकड़े और पराठों की तरह बेल कर तवे पर सेंके जा सकते हैं।

टमाटर की लौंजी या चटनी (टमाटर नी लौंजी)

सामग्री-

पके टमाटर	-	250 ग्राम
गुड़	-	150 ग्राम
नमक	-	1 छोटा चम्मच
राई	-	1/4 छोटा चम्मच
जीरा	-	1/4 छोटा चम्मच
हल्दी	-	1/4 छोटा चम्मच
लाल मिर्च	-	1/2 छोटा चम्मच
हरी मिर्च	-	2 टुकड़े किए हुए
सौंफ	-	1/2 छोटा चम्मच
तेल	-	1 बड़ा चम्मच

विधि-

1. टमाटर को धोकर छोटे-छोटे टुकड़े काटें।
2. गरम तेल में राई, जीरा, हरी मिर्च और सौंफ का छौंक लगाकर टमाटर डालें।
3. नमक और हल्दी डालकर हिलाएं और धीमी आंच पर ढक कर पकने दें।
4. टमाटर गल जाने पर गुड़ डाल कर हिलाएं और गाढ़ा होने तक पकने दें और ठण्डा करें।

विशेष-

1. गुड़ टमाटर के गलने पर ही डालें नहीं तो टमाटर ठीक से गलते नहीं।
2. गुड़ की जगह चीनी (100 ग्राम) डाल कर भी बना सकता हैं।
3. लौंजी को स्वादानुसार गाढ़ी, पतली और खट्टी मीठी कर सकते हैं।
4. कच्चे आम को छीलकर उसकी लौंजी भी इस विधि से बना सकते हैं।

पौष मास कृष्ण पक्ष

धर्नुमास

इस महिने में कोई त्यौहार /व्रत नहीं रहता -14 दिसम्बर को धन की संक्रांति आती है उस दिन से 14 जनवरी मकर संक्रांति तक कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता। इसको धनुर्मास भी कहते हैं।

भोग- खिचड़ी - (सादी/मटर की बाजरे की) बैंगन का रायता, मेथी के टिकड़े, बाजरे के पवे, लड्डू, चलता अचार, पापड़ आदि का विशेष भोग लगाया जाता है।

मेथी की पूरी की जो सामग्री है वही सामग्री टिकड़े की भी है।

गूंथे हुए आटे से सादे टिकड़े की तरह बेल कर सेंक लें। टिकड़ों को गोदकर घी लगाये।

प्रेरणादायक व्यक्तित्व- श्री गोवर्द्धनलालजी मेहता

परिश्रम और संघर्ष की प्रतिमूर्ति श्री गोवर्द्धनलालजी मेहता के व्यक्तित्व से नई पीढ़ी प्रेरणा ले सकती है कि जीवन में सफलता के लिए उच्चशिक्षा से ज्यादा निरन्तर परिश्रम, सिद्धांतवादी विचार एवं परोपकार की भावना की आवश्यकता पड़ती है।

चुनौति- श्री गोवर्द्धनलालजी मेहता ने कई व्यवसायों में हाथ आजमाने के बाद समाचार पत्र प्रकाशन की चुनौति स्वीकार की। वह जमाना साधनों के अभाव का था परन्तु दृढ़ संकल्प एवं प्रबल इच्छाशक्ति के सामने सभी अभाव बौने सिद्ध हो जाते हैं। अभाव और सीमित साधनों के बावजूद भी जब खबरें न छपने के बदले मिलने वाले शानदार प्रलोभनों को उन्होंने स्वीकार नहीं किया अर्थात सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। दरअसल उन्हें पता था कि अखबार चलाने के लिए कोरी चमक-दमक की जरुरत नहीं है, पाठकों की नब्ज पकड़ना पड़ेगी तथा सत्य एवं तथ्यात्मक खबरों से ही पाठकों के दिल में जगह बनेगी। इसी प्रकार ग्रामीण पत्रकारिता को उन्होंने प्रोत्साहित किया तथा सम्बंधों को महत्व दिया। एक स्थान पर जो प्रतिनिधि नियुक्त किया वह बरसों-बरस समाचार पत्र से जुड़ा रहा बल्कि अखबार के नाम के रुप में उसे जाना जाने लगा।

पारिवारिक दायित्व- दासाब ने व्यवसाय में आदर्श एवं सिद्धांत स्थापित करने के साथ पारिवारिक दायित्वों को भी खूबी से निभाया। अपने छोटे भाई-बहनों के विवाह उनके पालन-पोषण के स्थायी साधन जुटाने के साथ पुनः उनके बच्चों का विवाह अपने स्वयं के बच्चों की तरह किए, वर्तमान में संयुक्त परिवारों में भी इतना अपनापन देखने को नहीं मिल पा रहा है। साथ में रहो तो दूध में चीनी की तरह घुलकर रहना जरुरी है परिवार के किसी भी सदस्य के साथ उनका भेदभाव नहीं था, सबको एक जैसा ट्रीटमेंट दिया। परिवार के लिए कुछ करो तो उसमें जताने का भाव नहीं आना चाहिए।

सामाजिक प्रतिबद्धता- समाचार पत्र से जुड़े संगठन संकट में पड़ने के समय दासाब का मुंह ताकते थे, वहीं उनके कार्यकाल के दौरान शहर में जो आंदोलन हुए उनमें उन्होंने पूरा साथ दिया। उनका मत था कि समाचार पत्र जनता की पूंजी है तथा उन्हीं के हित के लिए है कई बार मौके आए कि वे अपने पाठकों और सिद्धांतों के लिए शासन-प्रशासन से भी भिड़ गए। यह बात आज भी प्रासंगिक है कि अखबार एक स्वतंत्र संस्था है उसे शासन प्रशासन के दबाव में काम नहीं करना चाहिए लेकिन उसके लिए स्वयं का भी पाक-साफ होना जरुरी है। वे प्रशासनिक अधिकारियों को अपनी शक्ति का अहसास कराने के बाद उन्हें अपना मुरीद बना लेते एवं सम्बंधो का उपयोग जनहित एवं परोपकार के लिए करते थे। स्वयं के लिए उन्होंने कभी कुछ नहीं मांगा। इसी प्रकार नागर समाज के बहुत से परिवार उनके कृतज्ञ है कि उन पर जब-जब संकट आया तो दासाब ने अपने सम्पूर्ण प्रभाव का इस्तेमाल कर उनकी मदद की। परिश्रम से पैसा कमाया जा सकता है किन्तु प्रतिष्ठा कमाने के लिए तो सेवा ही जरुरी है। वे पारिवारिक दायित्व एवं सामाजिक प्रतिबद्धताओं के साथ व्यवसाय में भी निपुण थे तथा समय के साथ चलना जानते थे, इसीलिए चुनौति पूर्ण अखबार के व्यवसाय को उन्होंने निरन्तर प्रगति प्रदान की। आज भी दैनिक अवन्तिका की विश्वसनीयता एवं प्रसिद्धि कायम है तो उसके पीछे दासाब के सिद्धांत एवं परिश्रम ही कारक है। यह अखबार नागर समाज का गौरव है साथ ही उसके संस्थापक की कार्यप्रणाली युवाओं के लिए प्रेरणादायक है, जब सत्य, सिद्धांत और दृढ़ प्रतिज्ञा हो तो सफलता के लिए शार्टकट की जरुरत नहीं है। धैर्य के साथ अपने व्यवसाय, परिवार एवं समाज की सेवा में लगे रहें निश्चित ही सफलता आपके कदम चुमेगी और यश-प्रतिष्ठा आपके द्वार खटखटाएंगे।

-प्रभा शर्मा, इन्दौर

तृतीय पुण्य स्मरण तिथी

स्वर्गीय श्रीमती सुशीला नागर पत्नी स्वर्गीय जीवनलालजी नागर

(जन्म 29-10-1931) (उदयपुर राजस्थान)

(अवसान 30-11-2005)

राज्य ज्योतिषी परिवार की ज्येष्ठ बहू पारिवारिक सम्बंधों की प्रगाढ़ता के साथ स्नेहपूर्ण, सजग सजीव व एक्यता को दृढ़ता पूर्वक बनाये रखने के प्रति समर्पित कर्मठ, विवेकी, ज्योतिष-ज्ञानी, हंसमुख जीवन्त स्वभाव लिए नागर समाज की संभ्रान्त महिला रही उन्हें सादर विनम्र श्रद्धावत स्मरणांजलि अर्पित करते हैं।

समस्त जोशी परिवार, इन्दौर

पुरुषोत्तम जोशी

528, उषा नगर एक्स. इन्दौर

मो. 9229993726

कृष्णा ज्योतिष केन्द्र

कालसर्प, पितृदोष, संतान संबंधित समस्याओं का
निःशुल्क समाधान किया जाता है।

अनन्त शुक्ल 'ज्योतिषाचार्य' मुरली मनोहर मन्दिर दिलोद्री पो. कनासिया, उज्जैन

नागर समाज के नवदुर्गोत्सव में संस्कार एवं संस्कृति की झलक

इन्दौर। उत्सव एवं पर्व मनाने के साथ उनके उद्देश्य पूर्ण करने का प्रयत्न यदि किया जाता है तो वह इन्दौर में आयोजित नवदुर्गोत्सव समारोह में। त्यौहारों की मूल भावना है परिवार में उत्साह एवं समाजबंधुओं के बीच मेलजोल बढ़ाना। समारोह में नौ दिनों तक उपस्थित होने वाले परिवारों के बीच निश्चित रुप से मेलजोल बढ़ता है, वहीं गरबा करने वाली युवतियां एवं महिलाएं वेषभूषा एवं व्यवहार में सम्पूर्ण मर्यादा बनाए रखती है उनका उद्देश्य गरबे के माध्यम से कुलदेवी की भक्ति एवं आराधना करना है। इसीलिए विगत 30 सितम्बर से 8 अक्टूबर तक आयोजित महोत्सव में संस्कार एवं संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। श्री श्री माँ आनन्दमयी आश्रम में प्रतिमा स्थापना के साथ दो ताली गरबा, तीन ताली गरबा, हुण्डी गरबा, डांडिया रास प्रतिदिन के आकर्षण के साथ ही हाथों में दीपक सजाकर किए गरबे ने सबका मन मोह लिया। कर्णप्रिय आर्केस्ट्रा, मोहक गरबा गीत एवं आकर्षक विद्युत सज्जा में भक्तिरस का जो आनन्द समाजबंधुओं ने लिया, उसका इंतजार वर्ष-प्रतिवर्ष किया जाता रहता है। उत्सव के दौरान प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रतिभाओं का संवर्द्धन किए जाने के उद्देश्य हेतु 2 अक्टूबर को महिला मंडल द्वारा रंगोली, मेहंदी, सुलेख तथा भजन गायन की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। रंगोली में जुनियर ग्रुप में स्वाति मंडलोई प्रथम, सलोनी व्यास द्वितीय तथा शिवानी नागर तृतीय रही। सीनियर ग्रुप में दिव्या मंडलोई प्रथम, स्वास्तिक मेहता द्वितीय तथा संगीता दवे तृतीय रहे। वरिष्ट ग्रुप में विशेष पुरस्कार श्रीमती अरुणा व्यास को दिया गया। मेहंदी में प्रथम पुरस्कार श्रीमती दिव्या मंडलोई द्वितीय अंजू पौराणिक तथा तृतीय अंजना व्यास को दिया गया। सुलेख में दो ग्रुप थे जिनमें मध्यम ग्रुप में जयनागर प्रथम, स्वस्तिक मेहता द्वितीय, साक्षी मेहता तृतीय रहे। सीनियर ग्रुप में श्रीमती मीनाक्षी रावल प्रथम, श्री केदार रावल द्वितीय तथा श्री विनय नागर तृतीय रहे। भजन गायन में 3 से 7 वर्ष में चिरायु मेहता प्रथम, कु. स्वास्तिका दवे द्वितीय, कु. दीनांशी रावल तृतीय, 7 से 12 वर्ष में कु. सलोनी व्यास प्रथम, कु. दृष्टि रावल द्वितीय, कु. श्रुति मेहता तृतीय, 12 से 18 वर्ष में स्वाती मंडलोई प्रथम, शिवानी व्यास द्वितीय, अंकित नागर तृतीय रहे। महिलाओं की भजन प्रतियोगिता में श्रीमती दिव्या मंडलोई प्रथम, श्रीमती चारुमित्रा नागर द्वितीय अनिता पौराणिक तृतीय रहीं। दिनांक 5-10-2008 को आयोजित प्रतियोगिताओं में फैंसी ड्रेस, श्लोक गायन एवं निबंध प्रतियोगिता का आकर्षण रहा छोटे-छोटे बच्चों की प्रस्तुति चिंता ने बड़ों को भी सोचने के लिए मजबूर किया। विभिन्न ग्रुपों में परिणाम निम्नानुसार रहे- श्लोक आयु वर्ग 3 से 6 वर्ष प्रणव त्रिवेदी प्रथम, आपूर्वा त्रिवेदी द्वितीय, सोम्या नागर तृतीय, 7 से 10 वर्ष में कीर्ति वर्द्धन रावल प्रथम, गौरी दवे द्वितीय, स्वास्तिका दवे तृतीय 11 से 15 वर्ष में दृष्टि रावल प्रथम, श्रुति मेहता द्वितीय, कथन नागर तृतीय, 16 से उपर कल्पना दवे प्रथम, दुर्गा जोशी द्वितीय चारुमित्रा नगार तृतीय, फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता में 0 से 3 वर्ष कुशल व्यास प्रथम, संस्कृति नागर द्वितीय, आराध्य पौराणिक तृतीय, 3 से 6 वर्ष में प्रणव त्रिवेदी प्रथम, आयुर्दा त्रिवेदी द्वितीय, सोम्या नागर तृतीय, 7 से 10 वर्ष में सहर्ष दवे प्रथम, स्वास्तिका दवे द्वितीय, हिमांशु नागर तृतीय, 10 से 18 वर्ष में जयेश दवे प्रथम, कथन नागर द्वितीय, तन्मय नागर तृतीय रहे। निबन्ध प्रतियोगिता का विषय पूर्व घोषित था, इस पर गंभीर चिंतन व तर्कों से परिपूर्ण निबंध प्राप्त हुए। निबंध का विषय था ''नवरात्रि साधना एवं सम्मेलन का उत्सव'' जिसका परिणाम निम्नानुसार रहा जुनियर ग्रुप कु. श्रेया मेहता प्रथम, कु. दृष्टि रावल द्वितीय, चि. तन्मय नागर तृतीय। सीनियर ग्रुप में श्रीमती अरुणा व्यास प्रथम, श्रीमती मीनाक्षी रावल द्वितीय, श्री संतोष पौराणिक तृतीय। दिनांक 7 अक्टूबर अष्टमी को हवन किया गया जिसमें डॉ. नीलेश नगार, श्री सुनील त्रिवेदी, श्री राजेन्द्र व्यास ने सपत्निक भाग लिया। पूजन अर्चन एवं हवन का कार्य पं. सतीश त्रिवेदी, श्री उमाशंकर मेहता, श्री नवीन चन्द्र रावल एवं श्री विश्वनाथ व्यास ने सम्पन्न करवाया। कार्यक्रम के संयोजक श्री आशीष त्रिवेदी एवं श्रीमती उषा दवे का सहयोग प्रशंसनीय रहा। विजेताओं एवं प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया तथा इसका भार भी समाज पर नहीं आते हुए पुरस्कार प्रदाताओं पर ही रहा।

प्रस्तुति- व्रजेन्द्र नागर

25, मंगल नगर, बिचोली हप्सी रोड, इन्दौर फोन 2309137

गुरुजी श्री कैलाश नागर

बी.ए.बी.जे.कॉम. ज्योतिष रत्न, वास्तु विशारद

चेयरमेन--------------------

ह्यूमन वेलफेयर कमिटमेंट चेरिटेबल ट्रस्ट

विशेषज्ञः- फेस रीडिंग, हस्तरेखा, जन्मफल, वर्ष-फल, लाल किताब एवं बिना तोड़फोड़ वास्तु दोष निवारण। मिलने हेतु संपर्क करें: विशाल पटेल, मो.98260-97866

महर्षि पाराशर

एस्ट्रो इन्टरनेशनल सेंटर

सर्व धर्म समभाव

आश्रम : 5, मारुति नगर, सुखलिया, निवास : 17-बी, 24 बंगलो, स्कीम नं. 114-I, सागर ऑटो मोबाइल के सामने, देवास नाका, ए.बी. रोड़, इन्दौर फोन-(नि.) 0731-2554488 मो.94250-55308

नागर निर्देशिका का विमोचन एवं प्रतिभाओं का सम्मान

इन्दौर। अ.भा. नागर परिषद शाखा इन्दौर के तत्वावधान में नागर प्रतिभाओं का सम्मान किया गया, तथा इन्दौर शहर के नागर परिवारों की टेलीफोन निर्देशिका का विमोचन किया गया। श्री श्री माँ आनन्दमयी आश्रम में आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह की अध्यक्षता श्रीमती वीणा शर्मा (कार्यक्रम अधिकारी आकाशवाणी) ने की एवं मुख्य अतिथि थे गणेशाचार्य पं. कैलाशजी नागर (आज तक फेम) अतिथियों का स्वागत अध्यक्ष पं. रमेश प्रसाद रावल, सचिव नीलेश नागर, शिवांजली ट्रस्ट के अध्यक्ष आशीष त्रिवेदी, डॉ. श्रीमती रेणुका मेहता, व्रजेन्द्र नागर ने किया। गत वर्ष परीक्षाओं में स्वर्णिम सफलता प्राप्त करने वाली प्रतिभाओं का सम्मान करते हुए गणेशाचार्य पं. कैलाशजी नागर ने कहा कि प्रतिभा तो स्वयंसिद्ध होती है, उसे निखारने में ज्योतिष विज्ञान एवं वास्तु का बड़ा योगदान हैं विद्यार्थी अध्ययन के समय मुंह उत्तर की तरफ रखें तथा कक्ष का रंग हरा होना चाहिए। डॉ. वीणा शर्मा ने कहा कि तरुणाई अपनी प्रतिभा का उपयोग सृजन में करें तो आतंकवाद स्वयं नष्ट हो जाएगा। उन्होंने कहा कि नागर समाज में कुरीतियों के लिए कोई स्थान नहीं है। नागर प्रतिभाओं को प्रतिवर्ष चांदी के मेडल एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए जाते हैं। चांदी के मेडल नागर विद्योत्तेजक फंड ट्रस्ट द्वारा उपलब्ध कराए जाते हैं। साथ ही नवदुर्गोत्सव में गरबा प्रतिभागियों एवं विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। आयोजन के दौरान अ.भा. नागर परिषद शाखा इन्दौर की वार्षिक गतिविधियों का प्रतिवेदन पं. रमेश रावल ने प्रस्तुत किया। जबकि नीलेश नागर ने शिवांजली ट्रस्ट, डॉ. नरेन्द्र नागर ने नागर विद्योत्तेजक ट्रस्ट, डॉ. रेणुका मेहता ने महिला मंडल की गतिविधियों से अवगत कराया। इस अवसर पर इन्दौर नागर समाज की टेलीफोन निर्देशिका का विमोचन अतिथियों ने किया। समाज की सर्वोच्च प्रतिभाओं के द्वारा प्रतिभाओं का सम्मान कर उनके संवर्द्धन की अद्वितीय परम्परा का पालन समाज द्वारा किया जाता है कार्यक्रम का संचालन श्री हर्ष मेहता एवं श्री आशीष त्रिवेदी ने किया तथा आभार श्रीमती प्रमिला त्रिवेदी ने माना।

श्रद्धांजलि : 26 नवम्बर 2008
ज्योतिष चिकित्सक - डॉ. अनिल कुमार रावल

इन्दौर। स्व. श्री भगवतीलालजी रावल (रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर) रतलाम के सुपुत्र डॉ. अनिल रावल के दिनांक 26 नवम्बर 08 को देहावसान से नागर समाज इन्दौर को अपूरणीय क्षति हुई है। डॉ. रावल का जन्म 22 अप्रैल 1939 को निनोर राजस्थान में हुआ आप परिवार में सबसे बड़े थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा मल्हार आश्रम इन्दौर में हुई तथा मेडिकल की शिक्षा की शिक्षा बी.ए.एम.एस. राजकुमारसिंह आयुर्वेदिक कॉलेज इन्दौर से पूर्ण की। चिकित्सा व्यवसाय में रहते हुए आपने जावरा एवं रतलाम में पैलेस रोड पर सेवारत रहे। परिवार के ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते आप परिवार में सबके प्रिय थे। परन्तु बढ़ती उम्र के साथ ब्लड प्रेशर से पीड़ित रहे। आपने माता-पिता का पूर्ण स्नेह प्राप्त किया। ज्योतिष शास्त्र, अंक गणित, स्पर्श चिकित्सा, रैकी आपके प्रिय विषय थे। इन विधाओं में भी आपने इन्दौर में परामर्श कार्य किया। आप स्वभाव से अर्न्तमुखी होने के साथ ही स्पष्टवक्ता भी रहे। वर्तमान में इन्दौर में ही कंचनबाग रोड पर निवासरत थे। परिवार में चार बहनें श्रीमती निर्मला दीक्षित मुंबई, स्व. श्रीमती तेजस्वीनी मंडलोई खंडवा, श्रीमती उर्मिला-गिरीश मेहता उज्जैन एवं श्रीमती प्रमिला-आशीष त्रिवेदी इन्दौर है।

२४ वां पुण्यस्मरण
नागर समाज के गौरव पुरूष

स्व. जानकीलाल जी नागर

स्वर्गवास- 25 नवम्बर 1985

----श्रद्धावनत:----

मनोहरलाल नागर, नागेश्वर नागर, शिवहरी नागर, गणेश नागर, आशीष नागर एवं समस्त नागर परिवार।

जाने चले जाते हैं कहां दुनिया से जाने वाले...
आपकी मुस्कुराहटों से खिला है ये चमन

द्वितीय पुण्यस्मरण

श्री दुर्गाशंकरजी नागर

स्वर्गवास-28 नवम्बर 2006

श्रद्धावनत: हरिवल्लभ नागर (भाई), पं. कमल किशोर नागर, बलराम नागर (भतीजा), विनोद नागर (पुत्र), कृष्णम नागर (प्रपौत्र) सुनीता-शैलेन्द्र पंडया (पुत्री-दामाद) एवं समस्त नागर परिवार। मोबा. 98260-33980

नए वर्ष में तय करें
व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक प्रतिबद्धताएं

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जिस प्रकार पशु-पक्षी झुंड में रहना पसंद करते हैं, उसी प्रकार मनुष्य कितने भी उच्च पद पर क्यों न पहुंच जाए, कितना भी बड़ा क्यों न हो जाए उसे अपनो के बीच ही अच्छा लगता हैं। शास्त्रों में जो बातें ऋण के रुप में दर्शाई गई है पितृऋण, मातृऋण, समाजऋण उसे हम प्रतिबद्धता के रुप में ले सकते हैं- प्रत्येक क्षेत्र के बारे में हमारी प्रतिबद्धताएं क्या हो-

व्यक्तिगत- चूंकि हम समाज में अकेले नहीं रह सकते अतः व्यक्तिगत तौर पर विचार करें कि हमारा लक्ष्य क्या है? जीवन के जिस क्षेत्र में हम आगे बढ़ना चाहते हैं उसका सबसे पहले निर्धारण कर लें, तथा संकट या परेशानी आने के बावजूद पथविचलित न हों। जीवन में आगे बढ़ने का एक ही सूत्र है अपने कर्तव्यों का पालन, जब हम कर्त्तव्य करते हैं तो अधिकार अपने आप प्राप्त हो जाते हैं। अक्सर हम कहते हैं कि आपकी कृपा है। कृपा क्या ''कर'' और ''पा'' अर्थात पहले कर्म करो फिर पाने की लालसा रखो। हमारे कार्य और व्यवहार से सामने वाले को स्वयं प्रेरणा होना चाहिए। व्यक्तिगत तौर पर समय-समय पर आत्मावलोकन करते रहें। दूसरों के गुणों पर ध्यान दें तथा स्वयं के अवगुणों पर नजर रखें। सदैव प्रसन्न रहें, सकारात्मक सोच रखें।

पारिवारिक- परिवार में रहने के बावजूद प्रेम के अभाव एवं अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति न कर पाने से हम सुख-शांति को प्राप्त नहीं कर पाते। परिवार का दूसरा नाम है सांमजस्य, अतः परिवार के प्रत्येक सदस्य के साथ सामंजस्य बैठाएं, उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखें तथा उन्हें पर्याप्त प्रेम दें, आप देखेंगे कि यही सब चीजें वापस आपके पास ही लौट कर आती प्रतीत होगी। परिवार रुपी खेत को केवल प्रेम और त्याग के खाद-पानी की आवश्यकता है। परेशानी तभी खड़ी होती है कि हम देना नहीं चाहते तथा पाने की लालसा रखते है। दूसरी बात यह है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य, यहां तक कि रिश्तेदार मामा-भुआ, चाचा-ताऊ, आदि से भी समान भाव से प्रेम होना चाहिए। रिश्तों को जब हम प्रेम के तराजू में तोले तो उनका बराबर वजन होना चाहिए यहां तक कि अपने ससुराल मायके पक्ष से भी समान प्रेम रखना चाहिए। परिवार एवं रिश्तेदारी में भी प्रेम की असमानता दुःख का कारण बनती है। कम देंगे और ज्यादा की चाहत रखेंगे तो कहां से मिलेगा, इसी प्रकार आज कल युवकों का ससुराल के प्रति ज्यादा प्रेम भी दुःख का कारण बन जाता है, क्योंकि परिणाम स्वरुप अपने दूरी रखने लगते हैं। अतः प्रेम का संतुलन बनाए रखो और पारिवारिक सुख का आनन्द उठाओ।

सामाजिक- यदि तुम समाज के कार्यक्रमों में नहीं जाते हो तो इससे समाज को कोई फर्क नहीं पड़ता, तुम को पड़ता है, तुम्हारी पहचान धुंधली हो जाती है। अतः जब कभी समाज के उत्थान का कार्य हो सम्मिलन के अवसर हो तो आगे बढ़कर हिस्सा लो, समाज के पदाधिकारी भी वे कार्यकर्ता है जो आगे बढ़कर हिस्सा लेते हैं तथा उन्हें जिनसे सक्रिय सहयोग मिलता है उसी को वे प्रोत्साहित करते हैं, तब तुम को ऐसा लगता है कि पदाधिकारी केवल वर्ग विशेष को ही प्रोत्साहित, पुरस्कृत कर रहे हैं, तुम यह नहीं देखते कि वह वर्ग पदाधिकारियों का सक्रिय सहयोग भी कर रहा है, अतः तुम भी आगे बढ़ो, समाज कार्य में सहयोग करो तो तुम्हें भी प्रोत्साहन मिलेगा, सदैव स्वयं के क्रियाकलापों को देखो। जहां भी समाज का कार्य हो तो उसमें जी भर कर सहयोग करो, यहां तक कि श्रमदान भी करना पड़े तो करो, कई लोग कहते हैं कि ''हमार से काम नी होय, पैसा लई लो'' तो पदाधिकारियों ने कोई ठेका थोड़े ही ले रखा है। उन्हें भी समाज के प्रत्येक व्यक्ति का प्रोत्साहन चाहिए रहता है। तुम न तो सहयोग देते हो, न प्रोत्साहन ऐसे में समाज कैसे आगे बढ़ेगा? (प्रभावशाली पद पर बैठे बंधु समाज कार्य में आर्थिक सहयोग दिलवाएं)

आध्यात्मिक- हमें जो मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है, वह परमात्मा की प्राप्ति के लिए हुआ है, अन्य कोई यौनि नहीं है जिसमें भक्ति, सत्कर्म या परमात्मा प्राप्ति की गुंजाईश हो। भगवान कृष्ण कहते हैं कि मनुष्य के हाथ में केवल कर्म है, जो व्यक्ति निष्काम कर्म अतः बगैर किसी लालसा के कर्म करते हैं वे ही मुझे प्रिय है। यह आलसी शरीर एवं कहीं न ठहरने वाला मन कहां भक्ति पूजा करने देता है, अतः सबसे बढ़िया सूत्र है सत्कर्म करो। अपने तथा परिवार के लिए जो गतिविधि की जाए वह केवल कर्म कहलाती है जबकि परहित में किया गया क्रियाकलाप सत्कर्म कहा जाता है, अतः पूजा भक्ति छोड़ो, सत्कर्म करो। मन को साफ रखो अतः छल कपट रहित। और देखो कि दूसरों का भला करने से अपने आप खुद का भला होने लगेगा। मरने के बाद स्वर्ग की कामना क्यो, जीतेजी स्वर्ग का आनन्द लो, सबका भला सोचो, भला करो। जिस प्रकार भगवान सब पर समान कृपा बरसाते हैं ऐसा ही समभाव आप में भी हो। सब अच्छे हैं, सबमें परमात्मा का निवास है ऐसा जानकर त्याग और सहयोग की भावना रखो, तुम देखोगे कि आप पर आनन्द की वर्षा हो रही है, न पूजा करने की जरुरत रही न भक्ति की। अपने कर्मों का परिमार्जन कर जीते जी स्वर्ग का आनन्द उठाओ।

-दीपक शर्मा (मो. 9425063129)

विवेक मेहता के सम्बंधों का लाभ पूरे शहर को मिला
विनोद अग्रवाल की यादगार भजन संध्या सम्पन्न

इन्दौर। सुदामानगर निवासी श्री महेश मेहता के सुपुत्र विवेक मेहता ने सुप्रसिद्ध भजन गायक विनोद अग्रवाल एवं बलदेवकृष्ण सहगल से सहगायक के रुप में जो पारिवारिक संबंध बनाए उससे पूरा शहर भजन संध्या 'एक शाम राधा माधव के नाम' के माध्यम से लाभान्वित हुआ। विगत 12 अक्टूबर को राजमोहल्ला में वैष्णव स्टेडियम में आयोजित भजन संध्या के आयोजन में विवेक, महेश मेहता परिवार का विशेष योगदान रहा प्रमुख सहयोगियों में श्री पवन शर्मा, श्री विष्णु गोयल, श्री स्वरुप गुप्ता मथुरावाला, श्री गणेश गुप्ता एवं श्री सुरेश प्रजापत उल्लेखनीय रहे। आयोजन की विशेषता रही कि उपरोक्त सभी ने मिलकर आयोजन व्यय की पूर्ति की। आशा की जाती है कि भविष्य में भी इन भजन गायकों का आयोजन बड़े पैमाने पर हो।

आयोजन की शुरुआत में भजन गायक श्री विनोद अग्रवाल एवं श्री बलदेवकृष्ण सहगल की टीम का स्वागत सुप्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. पी.एस. हार्डिया, आयोजन समिति के सर्वश्री महेश मेहता, दीपक शर्मा, स्वरुप गुप्ता, विष्णु गोयल एवं गणेश गुप्ता ने किया। सुमधूर भजन श्रृंखला की टीम से जुड़े इन्दौर के भजन गायक विवेक मेहता ने **''मथुरा में जाकर मनमोहन तुम बांसुरी बजाना भूल गए''** भजन प्रस्तुत किया। पश्चात श्री विनोद अग्रवाल ने शरद पूर्णिमा पर होने वाले महारास पर सुमधूर भजन करुणानिधि नाम तुम्हारा है तो करुणाकर रास रचाना पड़ेगा.... मुरलिया बाजी रे यमुना तीरे..... दिल को दिल की गोद में लेकर पिया मैं छमक-छमक लहराऊं.... एक के बाद एक सुमधूर भजनों के प्रवाह के साथ पंडाल में उपस्थित धर्मालुओं का मंत्रमुग्ध होकर नृत्य में झुमना... जलवा दिखा के अपना पागल बना दिए हम.. सांवरिया मुरलिया बजा.... ''मेरे रोम-रोम में श्याम मगन मैं नाचूंगी'' एक से बढ़कर एक भजनों के बीच भावपूर्ण शेरो शायरी से मंत्रमुग्ध श्रद्धालु झूम उठे। भजनों का समापन दौर आते-आते तो आधे से ज्यादा श्रद्धालु झूमने लगे। इस सुमधूर भजन संध्या में हार्मोनियम पर बलरामजी गुप्ता, तबला वादन में मन्दिपसिंहजी जौली, ढोलक पर सुरेश मेहरा ने संगत दी। सहगायक थे मुरलीजी सहगल, प्रेमजी सहगल। इस भजन संध्या की यह विशेषता रही कि न तो आयोजन के लिए कहीं से चंदा एकत्रित किया गया न पोस्टर बैनर लगाए गए। निमंत्रण पत्र, मौखिक आग्रह एवं प्रिंट मीडिया इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर प्रचार के माध्यम से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पधारे। जिलाधीश श्री राकेश श्रीवास्तव ने श्रद्धालुओं के साथ जमीन पर बैठकर एक घंटे तक भजनों का आनन्द लिया। कार्यक्रम का संचालन सुश्री श्रद्धा शर्मा ने तथा आभार प्रदर्शन आयोजन समिति प्रमुख श्री महेश मेहता ने किया।

उज्जैन नागर निर्देशिका एवं विशेषांक का प्रकाशन

जय हाटकेश वाणी का आगामी अंक उज्जैन के नागर परिवारों की टेलीफोन निर्देशिका एवं विशेषांक के रुप में प्रकाशित किया जा रहा है। अतः जिन सदस्यों के आवासीय पते फोन, मोबाईल नंबर में परिवर्तन हुआ हो अथवा वे कोई प्रकाशन सामग्री भेजना चाहते हैं तो अतिशीघ्र सम्पर्क करें

दीपक शर्मा - मो. 94250-63129,
पवन शर्मा- मो. 9826095995

नागर कैलेण्डर का प्रकाशन

जय हाटकेश वाणी द्वारा नए वर्ष का नागर कैलेण्डर 2009 प्रकाशित किया जा रहा है। उपरोक्त कैलेण्डर में समाज के त्यौहारों का विशेष उल्लेख होने के साथ महत्वपूर्ण हस्तियों की पुण्यतिथि का प्रकाशन भी किया जाएगा। कैलेण्डर में अपने दिवंगत पूर्वजों के फोटो प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें-

पवन शर्मा -
मो. 98260-95995

नागर ब्राह्मण परिषद् का दीपावली मिलन एवं अन्नकूट महोत्सव सम्पन्न

झाबुआ। दिनांक 31.10.2008 को नागर ब्राह्मण परिषद शाखा झाबुआ द्वारा स्थानीय गायत्रीमाता मन्दिर में 11 वां अन्नकूट महोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया, जिसमें झाबुआ, पिटोल, एवं मेघनगर के नागर ब्राह्मणों ने अपने प्रतिष्ठान बन्द रख कर सपरिवार प्रातः 10 बजे मन्दिर परिसर में उपस्थित होकर सभी ने गले मिलकर दीपावली की बधाई दी, उसके पश्चात समाज के संरक्षक एवं वयोवृद्ध श्री घासीरामजी नागर की अध्यक्षता में बैठक रखी गई, जिसमें दिनांक 8 अप्रैल 2009 को समाज के कुल देवता श्री हाटकेश्वर महादेव की 15 वीं जयन्ति मनाने का निर्णय लिया गया, झाबुआ नागर ब्राह्मण परिषद अध्यक्ष श्री राजेश नागर एवं पिटोल नागर ब्राह्मण परिषद अध्यक्ष श्री रामेश्वर नागर की अध्यक्षता में झाबुआ-पिटोल नवयुवक मंडल का गठन किया गया, जिसमें अध्यक्ष श्री किशन नागर पिटोल सचिव पुरुषोत्तम नागर मेघनगर कोषाध्यक्ष श्री देवेन्द्र नागर को सर्व सम्मती से एक वर्ष हेतु बनाये गये, युवा टीम के गठन के पश्चात दिनांक 8 अप्रेल 2009 को समाज के कुल देवता श्री हाटकेश्वर महादेव की 15 वी जयन्ति मनाने व आने वाले समस्त कार्यक्रम की सम्पूर्ण व्यवस्था युवा टीम ने करने निर्णय लिया गया, बैठक समाप्ति के पश्चात अन्नकूट महोत्सव की आरती आतीशबाजी के साथ उतारी गई, व माताजी नेवैद्य करने के पश्चात समाज के 180 सदस्यों एवं आमंत्रित अतिथियों ने भोजन प्रसादी का लाभ प्राप्त किया, इस अवसर पर परामर्शदाता श्री लक्ष्मीकान्त नागर, श्री विठ्ठल नागर, श्री हरिविठ्ठल, उपाध्यक्ष श्री सुभाष, सचिव श्री नारायण प्रसाद, कोषाध्यक्ष श्री देवेन्द्र, श्री महेश, श्री राकेश, श्री जितेन्द्र नागर, पिटोल से श्री सुखनन्दनजी नागर सदाशिवजी नागर, पुनमचन्दजी नागर एवं प्रकाशजी नागर व महिला समिति की अध्यक्ष पुष्पा बेन कोठारी, सचिव श्रीमती लीना नागर ने सभी उपस्थित समाजजनों का आभार माना व धन्यवाद दिया। उक्त जानकारी समाज के प्रचार सचिव श्री महेश नागर (भोले) द्वारा दी गई।

शीघ्रता करें, अंतिम तिथि १५ नवम्बर है

उज्जैन। म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति का 31 वां राज्य स्तरीय समारोह दिनांक 24 एवं 25 दिसम्बर 08 को उज्जैन में आयोजित किया जावेगा। समिति के सचिव श्री अशोक व्यास ने बताया कि 24 दिसम्बर को समिति के संस्थापक श्री विष्णुप्रसादजी नागर की स्मृति में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जावेगा जिसके प्रायोजक रहेंगे, श्री सुभाष भट्ट (गांधीनगर) एवं उनके मित्रगण। दिनांक 25 दिसम्बर को पुरस्कार वितरण समारोह होगा। पुरस्कार हेतु उज्जैन नगर के नर्सरी से कक्षा 8 तक एवं सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के कक्षा 9 से स्नातकोत्तर कक्षाओं तक के प्रथम श्रेणी के उत्तीर्ण एवं चिकित्सा, तकनीकी, कृषि आदि की प्रवेश परीक्षा में सफल छात्र अपनी अंक सूची की फोटोकॉपी भेजें। समिति द्वारा वर्ष 2007 तक पांच बार पुरस्कृत छात्र 'आशा-विष्णु' स्वर्ण पदक हेतु वर्षवार पुरस्कार की जानकारी सहित आवेदन प्रस्तुत करें। क्रीड़ा, विज्ञान, कला इत्यादि क्षेत्रों में राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्र भी अपने प्रमाण-पत्र भेजें। अंकसूची/प्रमाण-पत्र भेजने की अंतिम दिनांक 15 नवम्बर 2008 है। पुरस्कार हेतु चयनित छात्रों की मूल अंकसूची/प्रमाणपत्रों से सत्यापन पुरस्कार के पूर्व किया जावेगा।

अंकसूची/प्रमाण-पत्र भेजने का पता-

रमेश मेहता 'प्रतीक' अध्यक्ष, नागर ब्राह्मण प्र. छात्र प्रो. समिति, 530, सेठीनगर, उज्जैन

दिलीप त्रिवेदी (कोषाध्यक्ष) पर विवेकानन्द कालोनी, इन्दौर

पं. कैलाश नागर, 43, भाटगली, उज्जैन

श्री देवेन्द्र व्यास, सी-37/11, ऋषि नगर, उज्जैन

निम्नांकित पतों पर भी अंकसूची दिनांक 10-11-08 तक भेज सकते हैं-

श्री अशोक व्यास, (सचिव) एम-4/2, अर्चना कॉम्पलेक्स, साउथ टी.टी. नगर, भोपाल

श्री लक्ष्मीकांत नागर, नागनागनी मार्ग, शाजापुर

श्री विष्णुदत्त नागर, एल-55, जवाहर नगर, रतलाम

श्री जय व्यास, जी.एच-157, विजय नगर, (सिक्का स्कूल के पीछे), इन्दौर

सूरज मेहता का प्रेरणादायी सहयोग

उज्जैन। सामाजिक प्राणी होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि अपने लोगों की मदद करें। विगत दिनों नीमच में अंतिम संस्कार में शामिल होने जा रहे राऊ, इन्दौर के समाज बंधुओं का वाहन इंगोरिया के निकट आधी रात को जंगल में खराब हो गया, उसके सुधरने की कोई उम्मीद नहीं बची तो उज्जैन में सूरज मेहता (दैनिक अवन्तिका उज्जैन) से सम्पर्क किया गया, तो उन्होंने तुरन्त अन्य वाहन की व्यवस्था कर भिजवाने में सहयोग किया। देर रात जंगल में फंसे समाजबंधु जिनके साथ महिलाएं भी थी को इस सहयोग से असीम राहत की प्राप्ति हुई तथा वे समय पर नीमच पहुंच पाए। सूरज मेहता को इस कार्य के लिए हम सभी बधाई दें तथा प्रेरणा लें कि जहां कभी हमारे सहयोग की आवश्यकता हो, समय-बेसमय हो, हम तत्पर रहें।

-सम्पादक

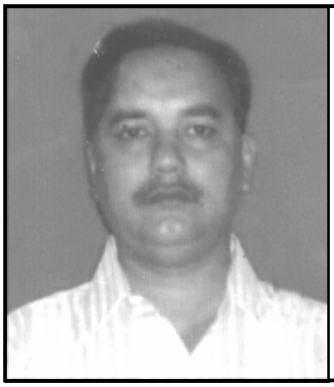

Kush Mehta

Bhoomi Space

A-10/4, LIG, Rishi Nagar, UJJAIN 456006 (M.P.)
Phone :- 0734-2524116, Cell 9827088736
e-mail : bhoomispace@yahoo.co.in
Web: www.buoomispace.com

सबसे खास रिश्ता - माँ

माता ने जो कष्ट उठाया वह ऋण हम कभी नहीं चुका सकते। वह हाथ पकड़कर चलना सिखाती है। पुरुष के लिए परिवार उसकी दुनिया का हिस्सा है जबकि स्त्री के लिए घर परिवार ही उसकी दुनिया है। स्त्री ने घर की देहरी लांघकर नए आयाम स्थापित किए हैं। परन्तु उसने अपनी जमीन नहीं छोड़ी। स्नेह, समर्पण एवं समझ सिद्ध करते है कि स्त्री माँ के रुप में बेहतर अभिभावक है। प्रकृति ने स्त्री को सृजन का अधिकार देकर एक तरह से उसकी श्रेष्ठता स्वीकार की है। स्त्री मन की विशेषता यह है कि उसमें प्रत्येक रचना के प्रति प्यार और परवाह होती है। चाहे वह उसकी हो या न हो। यही स्त्री का नेसर्गिक गुण होता है। स्त्री चाहे कैरियर की बुलन्दियां छू रही हो लेकिन अचानक वह शीर्ष स्थान को अलविदा कह सकती है, क्योंकि उसकी प्राथमिकता परिवार एवं बच्चे होते हैं। पांच वर्ष तक के बच्चे की संरक्षक उसकी माता ही होती है। रिश्ते स्त्री के लिए सबसे बड़ी पूंजी है, और वह उन्हें सहेज ने और संवारने की अहिमयत समझती है। उसका यह समर्पण बच्चे बचपन से देखते एवं महसूस करते हैं। इसीलिए वे अपने आपको भावनात्मक रुप से माँ के ज्यादा करीब पाते है। यह भाव माँ के रुप में अनन्तकाल से देखा जाता रहा है। बच्चे से जुड़ा हर काम वह पूरी लगन से करती है। माँ यदि थकी हुई और बीमार भी हो तो उसे बच्चों की चिन्ता रहती है कि कहीं वे भूखे तो नहीं सो गए? सहानुभूति का गुण ही बच्चे और माँ को एक अटूट बंधन में बांधता है। चोंट या भूख लगने पर बच्चा सबसे पहले माँ को याद करता है। दुनिया के सबसे खुबसूरत रिश्ते को नवाजती है। वह है माँ

-सौ. चारुमित्रा नागर
खजराना, इन्दौर

बांसवाड़ा के साहित्यकार श्री श्रीलाल जानी

शिक्षा - स्नातक
पिता का नाम - श्री डायालाल जानी
जन्म स्थान- बांसवाड़ा
जन्म दिनांक- 11 सितम्बर 1946
जिले में निवास का दिनांक- जन्म से।
व्यक्तित्व व कृतित्व - प्रमुख ट्रस्टी, वागड़ सेवा संस्थान।
संप्रति - व्यवसायी।
वर्तमान पत्र व्यवहार का पता - धनलक्ष्मी मार्केट, नागरवाड़ा रोड़, पीपली चौक, बांसवाड़ा।
फोन नम्बर - 02962-240213, 242926

म.प्र. नागर परिषद शाखा पेटलावद का गठन

पेटलावद। विगत दिनों स्थानीय हाटकेश्वर महादेव मंदिर में नागर समाज की बैठक आयोजित की गई। जिसमें म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद पेटलावद शाखा का गठन किया गया। जिसमें सर्वानुमति से संरक्षक श्री विट्ठल नागर, परामर्शदाता श्री कृष्णकांत नागर एवं श्री गोविन्द नागर, अध्यक्ष श्री विनोद-नागर उपाध्यक्ष- प्रदीप नागर, सचिव मांगीलाल नागर कोषाध्यक्ष- श्री उपेन्द्र एवं नितेश नागर। सर्वश्री कैलाश नागर, राजेश नागर, नटवर नागर, दिनेश नागर को कार्यकारिणी सदस्य बनाया गया।

शुभकामना पहुंच रही है...

दीपावली पर कलि सुहानी,
अलि गलि में भटक रही है
देखो जानों न कुचलो उसको
जिन्दगी उसकी संवर रही है
मंगला है वरण करने को
रिद्धि सिद्धि संग मचल रही है
लाभ शुभ से मोदक लेकर
कामना समृद्धि कर रही है
मिटे अंधेरा जीवन से बस
स्वयं सिद्ध हो चहक रही है
दीप मलिका दीपक लेकर
पथ प्रशस्त ही कर रही है
मंगलमय हो वर्ष आपका
शुभकामना पहुंच रही है

-व्रजेन्द्र नागर
251 श्री मंगल नगर, इन्दौर

पंचवटी ढाबा

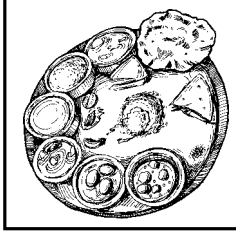

इन्दौर रोड, खण्डवा
शुद्ध शाकाहारी
भोजन के लिए

पंचवटी मोटर सर्विस
खण्डवा
बिल्डिंग मटेरियल
सप्लायर्स एवं ठेकेदार

राजकुमार मण्डलोई 9329842963
धनराज मेहता - 9907558080

आयुषी मंडलोई का बालरंग (मोगली उत्सव) में राज्य स्तर प्रतियोगिता में चयन

खंडवा। सेंट जोसफ कान्वेन्ट उ.मा. शाला खंडवा की प्रतिभाशाली छात्रा कु. आयुषी संजीव मंडलोई का जिला स्तरीय बालरंग प्रतियोगिता (मोगली उत्सव) में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु चयन किया गया। कु. आयुषी आगामी माह में सिवनी जिले में आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेंगी।

शरदोत्सव सानन्द सम्पन्न

खंडवा। नागर समाज खंडवा के नवयुवकों द्वारा इस वर्ष भी शरदोत्सव का भव्य समारोह स्थानीय हाटकेश्वर नागर धर्मशाला में सम्पन्न हुआ कार्यक्रम में फ्री स्टाईल गरबा, डांस, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं हास्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें समस्त नागर युवक/युवतियों ने उत्साह पूवर्क सहभागिता की गई। कार्यक्रम में स्वल्पाहार का आयोजन एवं समाज की ओर से अमृत दूध का आयोजन भी रखा गया था।

श्री चितरंजन जोशी पदोन्नत

खंडवा। नेशनल इंश्योरेंस खंडवा में विगत सत्रह वर्षों (1992) से कार्यरत श्री चितरंजन S/o .डॉ एस.बी. जोशी न्यू पलासिया इन्दौर की पदोन्नति सहायक प्रशासनिक अधिकारी (A.A.O) के पद पर इन्दौर क्षेत्रिय कार्यालय के द्वारा की गई है श्री जोशी को नवीन पदस्थापना निकट भविष्य में दी जाना है।

कु. अश्विता मांकड का चयन इंडियन रेवेन्यू सर्विस में

खंडवा। श्रीमती वर्षा मांकड (चंपा मोसी) की नातिन अश्विता मांकड (सुपुत्री- अमिताभ-विनिता मांकड) का चयन इंडियन रेवेन्यू सर्विस में हुआ है। वे अब नागपुर (महाराष्ट्र) में ट्रेनिंग हेतु रवाना होगी। ज्ञातव्य है कि कु. अश्विता के पिता श्री अमिताभ मांकड इंडियन रेलवे सर्विसेस में कार्यरत है। समस्त नागर समाज एवं जय हाटकेश वाणी की बधाई।

-प्रस्तुति - श्रीमती शारदा मंडलोई

बधाई

गरबाड़ा (गुजरात) निवासी श्री रितेश मेहता-श्रीमती कीमिता मेहता को विगत 13 अक्टूबर 08 का पुत्रीरत्न की प्राप्ति हुई। बधाई।

भोपाल निवासी सेवानिवृत्त न्यायाधीश टी.एन.एच पंचोली के सुपुत्र योगेश-कीर्ति पंचोली को विवाह के 19 वर्षो के बाद पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई। बधाई।

मनोनयन पर बधाई

शाजापुर। श्रीमती तिलोत्तमा (छोटी सोनू) जेनेन्द्र नागर को शाजापुर शहर कांग्रेस अध्यक्ष मनोनीत किए जाने पर जयेश, योगेश, नीलेश नागर खजराना, पुष्पा नागर, रानी एवं तृप्ति नागर, ब्रजेन्द्र नागर, विनीत, वंदना ने बधाई दी है।

बेटियां

बेटियां हमारी शान है, घर की आन-बान सम्मान है।
बेटियों से घर स्वर्ग है, वरना जीवन नीरस है।
बेटी परिवार का आधार शिक्षित बेटी सुखी परिवार।
पढ़ा लिखा लें बेटी को भरेगी धन से पेटी को।।
बेटी बिन घर आंगन सूना, बेटी से सुख होता हूना ।
बेटियां जिनको मिली वे धन्य हो गये,
जो मूढ़ थे जड़ थे सब चैतन्य हो गये।।
बेटियां होती गुणों की खान बेटों से कम इसे न जान।
बेटियां है मोमबत्ती मोम सा दिल पाया है।।
इनकी मेहनत से ही घरों में प्रकाश आया है।
बेटी ज्यों-ज्यों ही बड़ी डरते हैं मां बाप।।
हे दहेज दानव खड़ा सदियों से अभिशाप
बेटियां घर की खुशहाली बेटियां ईद और दीवाली
बेटियां मंगलरुपा है। बेटियां शक्ति स्वरुपा है।
बेटियां ईश्वर का वरदान, दुनिया में अनमोल महान
बेटियां है घर-घर की शान इसका मत करना अपमान
बेटियों को खुशी दोगे तो खुशियां ही पाओगे।
मन एक दिन सारी दुनियां बेटियों के गुण गायेगी।

श्रीमती मनोरमा नागर
(सहायक शिक्षिका) मक्सी

जन्मदिन पर बधाई

श्रैया शर्मा
दि. 19 नवम्बर
सुपुत्री- मनीष-सीमा शर्मा
20, जुनी कसेरा बाखल,
इन्दौर (म.प्र.)
मो. 9926285002

चि. शिवेश शर्मा
आत्मज-मुकेश-मनीषा शर्मा
20-10-2008
शुभाकांक्षी, समस्त नागर,
व्यास एवं मेहता परिवार,
सुमित्रा सदन 63, रविन्द्र नगर, उज्जैन
फोन 0734-2516603